



MPEDA

समाचार पत्र

खंड. VII / संख्या. 11 & 12 / फ़रवरी / मार्च 2020



www.mpeda.gov.in

 /MPEDAIndia  /MPEDACOCHIN  /mpedaIndia  /mpedaofficial





CPF-TURBO PROGRAM

The shrimp industry has seen major developments and tasted success over the years, And not only are we proud to be part of it, but also take pride in pioneering it. To ensure the success and profitability of the Indian Shrimp Industry, our highly determined team with committed Aquaculture specialists constantly provide the shrimp farmers with access to the latest and updated technology.



CPF-TURBO PROGRAM -
Pioneering Successful and Profitable Shrimp Aquaculture

विषय सूची

फरवरी - मार्च 2020



03 भारतीय अंतरराष्ट्रीय समुद्री खाद्य प्रदर्शनी-2020



25 एमपीईडीए अध्यक्ष ने काकीनाड़ा बंदरगाह का दौरा किया



41 करीनाडा की आंबेडकर जलीय किसान कल्याण समिति के सपनों को सकार करने में मदद की एनएसीएसए ने



54 भारतीय संस्थान ने मछली की ताजगी जांचने के लिए नया यंत्र विकसित किया

इस प्रकाशन के विद्वत्पूर्ण लेखों में व्यक्त विचार एमपीईडीए के विचार नहीं हैं, यह सिर्फ लेखक के विचार हैं।
इस प्रकाशन के विद्वत्पूर्ण लेखों के जानकारी की सटीकता की ज़िम्मेदारी लेखकों पर निहित है,
यह न ही एमपीईडीए और न ही संपादकीय गण की ज़िम्मेदारी है।



आप के लिए

के.एस. श्रीनिवास आईएएस
अध्यक्ष

प्रिय मित्रों,

एमपीईडीए ने माह के दौरान सीफूड एक्सपोर्ट्स एसोसिएशन के साथ मिलकर कोचीन में 22 वें इंडिया इंटरनेशनल सीफूड शो का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस आयोजन में निर्यातकों की जबरदस्त भागीदारी देखी गई। मैं इसके लिए भारतीय सीफूड एक्सपोर्ट्स एसोसिएशन का आभारी हूँ। प्रदर्शनी में खरीदारों, मशीनरी, उपकरण निर्माताओं, सेवा प्रदाताओं और अन्य हितधारकों की भी उल्लेखनीय उपस्थिति रही। शो के दौरान समानांतर रूप से तकनीकी सत्रों का भी आयोजन किया गया जिनमें निर्यातकों, व्यापारियों, शोधकर्ताओं और छात्रों ने शिरकत की।

शो के ही दौरान एक अन्य समारोह में एमपीईडीए ने 2017-18 और 2018-19 के लिए विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत दिए जाने वाले निर्यात पुरस्कार भी वितरित किए। इस वर्ष चेंबरमैन स्पेशल अवार्ड के रूप में दो विशेष पुरस्कार भी घोषित किए गए। पहली श्रेणी में साल के दौरान सर्वश्रेष्ठ उत्तरदायित्व वहन करने वाले निर्यातक के पुरस्कार के लिए मैसर्स ग्रे मरीन एक्सपोर्ट प्रा. लि रत्नागिरी को चुना गया जबकि दूसरी श्रेणी के तहत भारतीय समुद्री खाद्य क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान, विशेषकर समुद्री खाद्य प्रसंस्करण और मूल्य शृंखला में अनुपम योगदान के लिए मैसर्स अमालगम ग्रुप ऑफ कंपनीज के प्रबंध निदेशक अब्राहम जे. थराकन को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए चुना गया। इन प्रतिष्ठित पुरस्कारों के दोनों विजेताओं को मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

एमपीईडीए ने औपचारिक रूप से अपनी माइक्रोबायोलॉजी-कम-मौलिकयूलर प्रयोगशाला भी शुरू की है। जिसका उद्देश्य खासतौर पर समुद्री खाद्य के नमूनों का विश्लेषण करना है। विभिन्न जलीय रोगजनकों की जांच के लिए इसका एक अत्याधुनिक मौलिकयूलर बायोलॉजी सेक्शन भी है। कोचीन में एमपीईडीए द्वारा स्थापित गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला जो कि आधुनिक उपकरणों के साथ लैस है, से यह अपेक्षा की जाती है कि जलीय कृषकों और समुद्री खाद्य के प्रसंस्करणकर्ताओं के लिए यह बहुत काम की होगी। इस प्रयोगशाला के वित्तपोषण के लिए सचिव, केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण मंत्रालय को मेरी ओर से अति धन्यवाद।

धन्यवाद

प्रत्याख्यान : पाठकों से अनुरोध किया जाता है कि वे इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले उसकी सत्यता के बारे में स्वयं को संतुष्ट करने के लिए उपयुक्त जांच और सत्यापन करें। समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण, इस पत्रिका के प्रकाशक और मालिक, किसी भी विज्ञापन या विज्ञापनदाता या किसी भी विज्ञापनदाता के उत्पादों और/या सेवाओं का जिम्मा नहीं लेंगे। किसी भी सूरत में इसमें विज्ञापन के लिए इस पत्रिका / संगठन के मालिक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक, निदेशक/ कर्मचारी, किसी भी तरीके से जिम्मेदार/ उत्तरदायी नहीं हो सकते।

एमपीईडीए बाहरी इंटरनेट साइटों की सामग्री के लिए जिम्मेदार नहीं है।



एम.पी.ई.डी.ए

खंड. VII/संख्या. 11&12/फरवरी/मार्च 2020 समाचार पत्रिका

संपादक मंडल

श्री टी. डोला शंकर, आईओएफएस
निदेशक (वि.)

श्री बी. श्रीकुमार
सचिव

श्री पी. अनिल कुमार
संयुक्त निदेशक (अक्वा)

श्री के.वी. प्रेमदेव
उप निदेशक (विपणन संवर्धन)

डॉ. टी.आर. जिविन कुमार
उप निदेशक (एमपीईडीए रत्नागिरी)

संपादक

श्री डॉ. एम.के. राम मोहन
संयुक्त निदेशक (वि.)

सह संपादक

श्रीमती के.एम. दिव्या मोहनन
वरिष्ठ लिपिक

संपादकीय सहयोग

बिवर्ल्ड कॉर्पोरेट सोल्युशंस लिमिटेड

166, जवहर नगर, कडवन्ना,
कोच्ची, केरल, भारत- 682 020
फोन: 0484 2206666, 2205544
www.bworld.in, life@bworld.in

लेआउट

बिजो फ्रांसिस जॉन



www.mpeda.gov.in
support@mpeda.gov.in

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
की ओर से श्री बी श्रीकुमार, सचिव द्वारा
मुद्रित और प्रकाशित
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
एमपीईडीए हाउस, पुनम्पिल्ली एवेन्यू,
कोच्ची-682 036, फोन: +91 484 2311979

द्वारा प्रकाशित
एमपीईडीए हाउस,
पुनम्पिल्ली एवेन्यू,
कोच्ची-682 036

प्रिंट एक्सप्रेस
44/1469 ए, अशोका रोड,
कलूर, कोच्ची - 682 017 में मुद्रित



भारतीय अंतरराष्ट्रीय समुद्री खाद्य प्रदर्शनी-2020



भारतीय अंतरराष्ट्रीय समुद्री खाद्य प्रदर्शनी - 2020 का दीप जलाकर उद्घाटन करते
महामहिम राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान

इंडिया इंटरनेशनल सीफूड शो (आईआईएसएस 2020) का 22वां संस्करण केरल की वाणिज्यिक धड़कन कहे जाने वाले कोच्चि में 7 से 9 फरवरी 2020 तक आयोजित किया गया। इस बार शो की मुख्य थीम थी- 'ब्लू इवोल्यूशन : बियॉन्ड प्रोडक्शन टू वैल्यू एडिशन'। शो का उद्देश्य था, जलीय कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीकी हस्तक्षेपों और प्रगति पर ध्यान केंद्रित करना तथा प्राथमिक उत्पादन से लेकर प्रसंस्करण और परिवहन तक, समुद्री खाद्य उत्पादों की संपूर्ण मूल्य शृंखला में स्थायित्व के प्रति देश की प्रतिबद्धता को उजागर करना। इस द्विवार्षिक कार्यक्रम का आयोजन केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय की नोडल एजेंसी 'समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण' (एमपीईडीए) और 'सीफूड एक्सपोर्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया' (एसईआई) द्वारा किया गया था।

तीन दिवसीय कार्यक्रम में 1,500 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इनमें 12 देशों से आए 50 प्रतिनिधि भी शामिल थे जिन्होंने वैश्विक समुद्री उत्पाद उद्योग के समक्ष खड़ी

चुनौतियों और अन्य मुद्दों पर गहन विचार-विमर्श किया। एशिया की सबसे बड़ी समुद्री खाद्य प्रदर्शनियों में शामिल आईआईएसएस-2020 का यह आयोजन कोच्चि में 12 वर्षों के अंतराल के बाद हुआ। इसके अंतर्गत 7,000 वर्ग मीटर में फैले 300 से अधिक स्टॉल लगाए गए थे जिनमें मूल्यवर्धन के लिए स्वचालित और आईटी सहायता प्राप्त पूर्व-प्रसंस्करित, प्रसंस्करित और भंडारण प्रौद्योगिकियों पर आधारित उत्पादों की एक विस्तृत शृंखला प्रदर्शित की गई थी।

केरल के माननीय राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान ने 7 फरवरी को होटल ग्रैंड हयात में लुलु बोलगेट्टी इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में आईआईएसएस-2020 का उद्घाटन किया। इस अवसर पर अपने संबोधन में उन्होंने रोजगार बढ़ाने के लिए इस क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) को आकर्षित करने इसके लिए प्रयास तेज करने का आह्वान किया। उन्होंने समुद्री खाद्य उत्पादन को बढ़ाने की भी आवश्यकता बताई। इस मौके पर राज्यपाल महोदय ने

विपणन समाचार

उत्पादन, विविधीकरण और मूल्यवर्धन के आधार पर समुद्री खाद्य निर्यात को बढ़ावा देने के लिए तीन-स्तरीय रणनीति का भी खुलासा किया। उन्होंने विश्वास जताया कि इस तरह की रणनीति से भारत 2030 तक वैश्विक समुद्री खाद्य व्यापार में अपना हिस्सा वर्तमान 4.1 प्रतिशत से बढ़ाकर 6.7 प्रतिशत तक पहुंचा सकेगा। उन्होंने कहा कि समुद्र और मत्स्य पालन ने हमेशा हम भारतीयों की कल्पना को सम्मोहित किया है। यहां तक कि भगवान विष्णु का प्रथम अवतार भी मत्स्य रूप में था।

समुद्री खाद्य के महत्व पर प्रकाश डालते हुए राज्यपाल ने कहा कि वैश्विक आबादी का 40 प्रतिशत हिस्सा समुद्री तटों से 200 किमी के भीतर रहता है और 15 में से 12 मेगा शहर तटों के किनारे बसे हुए हैं। अकेले भारत में मत्स्य पालन क्षेत्र में लगभग 40.5 मिलियन लोग शामिल हैं। यह क्षेत्र हमारे सकल घरेलू उत्पाद यानी जीडीपी में एक प्रतिशत का योगदान देता है। एमपीईडीए के अध्यक्ष श्री के.एस. श्रीनिवास ने अपने स्वागत भाषण में जलीय कृषि को बढ़ावा देने, इस क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाने, खेती का विस्तार करने और प्रजातियों में विविधता लाने के लिए त्रि-आयामी रणनीति पर काम करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि इस

रणनीति पर अमल करने से वर्तमान पांच मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर उत्पादकता में 10 मीट्रिक टन तक पहुंचाया जा सकता है। इस संबंध में एक विजन डॉक्यूमेंट सरकार को भी सौंपा गया है। श्रीनिवास ने कहा कि बुनियादी ढांचे में सुधार, मूल्य संवर्धन, ब्रांड संवर्धन और व्यापार संवर्धन कार्यालयों की संख्या में वृद्धि व्यापार लक्ष्य को प्राप्त करने की दीर्घकालीन दिशा तय करेगी। उद्घाटन सत्र को एमपीईडीए की पूर्व अध्यक्ष सुश्री लीना नायर और श्री जी. मोहन कुमार, केरल राज्य औद्योगिक विकास निगम (केएसआईडीसी) के अध्यक्ष डॉ. क्रिस्टी फर्नांडीज, एसईएआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगदीश वी फोफांडी और एसईएआई केरल परिक्षेत्र के अध्यक्ष श्री एलेक्स के. नैनन ने भी संबोधित किया।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्री फर्नांडीज ने कहा कि उपभोक्ताओं की वरीयताओं में बदलाव के कारण नए बाजारों को रास्ता देते हुए पारंपरिक बाजार नीचे जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि नवोन्मेष, निवेश और एकीकरण से बाधाएं दूर करने का मार्ग प्रशस्त होगा। श्री फोफांडी ने कहा कि इस वर्ष प्राकृतिक आपदाओं के कारण विशेषकर जलीय कृषि क्षेत्र में प्राथमिक उत्पादक अधिक प्रभावित हुए हैं। सुश्री नायर ने कहा कि 2008-09 के बाद से जलीय कृषि क्षेत्र प्रगति के



प्रदर्शनी हॉल का उद्घाटन



स्वागत भाषण देते एमपीईडीए के अध्यक्ष श्री के.एस. श्रीनिवास, आईएएस



मंच पर उपस्थित गणमान्य अतिथि



आईआईएसएस-2020 की स्मारिका का विमोचन

विपणन समाचार



उद्घाटन भाषण देते महामहिम राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान



आईआईएसएस-2020 को संबोधित करते केरल राज्य औद्योगिक विकास निगम के अध्यक्ष डॉ. क्रिस्टी फर्नांडीज



एसईएआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगदीश वी. फोफांडी आईआईएसएस-2020 को संबोधित करते हुए



एमपीईडीए के पूर्व अध्यक्ष आईएस (सेवानिवृत्त) जी. मोहन कुमार आईआईएसएस-2020 को संबोधित करते हुए



एमपीईडीए के पूर्व अध्यक्ष आईएस (सेवानिवृत्त) लीना नायर उद्घाटन सत्र को संबोधित करती हुई



एसईएआई, केरल परिक्षेत्र के अध्यक्ष अलेक्स नैनन उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए

विपणन समाचार



आईआईएसएस-2020 के उद्घाटन सत्र में उपस्थित श्रोतागण



श्रोताओं को संबोधित करते केन्द्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री सोम प्रकाश



केरल की मत्स्य पालन मंत्री मर्कुट्टी अम्मा आईआईएसएस-2020 को संबोधित करते हुए



संसद सदस्य हिबी ईडन उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए



एमपीईडीए के पूर्व अध्यक्ष टी.के.ए. नायर, आईएसएस (सेवानिवृत्त) उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए



एमपीईडीए एक्सपोर्ट अवार्ड समारोह का उद्घाटन करते केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्यमंत्री श्री सोम प्रकाश

पथ पर अग्रसर होता चला गया। तब इसने दो अरब अमेरिकी डॉलर के निर्यात लक्ष्य हासिल किया जो कि अब 6.8 अरब डॉलर पहुंच गया है। श्री मोहन कुमार ने बताया कि वैश्विक समुद्री खाद्य व्यापार में भारत का योगदान केवल पांच प्रतिशत है उसके अंदर निर्यात के परिदृश्य में अपनी धमक दिखलाने की क्षमता है। भारत व्यापार शुल्क और गैर-व्यापार शुल्क जैसी बाधाओं पर काबू पाने और विविधीकरण के माध्यम से ब्लैक टाइगर समेत श्रिम्प केंद्रित व्यापार को आगे बढ़ने में पूरी तरह सक्षम है।

प्रदर्शनी के दूसरे दिन यानी 8 फरवरी को आयोजित शिखर सम्मेलन को केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग राज्यमंत्री श्री सोम प्रकाश ने संबोधित किया। उन्होंने आश्वासन दिया कि समुद्री खाद्य क्षेत्र में भारत को अब्बल निर्यातक बनाने का लक्ष्य हासिल करने की दिशा में केन्द्र सरकार हर संभव मदद करेगी। इसके लिए राज्य सरकारों और एमपीईडीए सहित सभी हितधारकों को नए जोश के साथ एकजुट होना होगा। श्री प्रकाश ने कहा कि समुद्री खाद्य उत्पादन के क्षेत्र में भारत को मौजूदा चौथे स्थान से पहले स्थान पर लाने की

त्वरित आवश्यकता है। यह स्वीकार करते हुए कि इस क्षेत्र में गुणवत्ता से समझौता किए बिना भारत को उत्पादन और निर्यात लक्ष्यों को प्राप्त करने में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है, उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार हर समस्या पर विचार करने को तैयार है। देश के समग्र आर्थिक विकास और रोजगार के अवसरों में सुधार की दिशा में इस क्षेत्र का बड़ा योगदान है। वर्तमान में यह क्षेत्र लगभग 14.5 मिलियन लोगों को रोजगार प्रदान करता है। केंद्रीय मंत्री ने समुद्री खाद्य क्षेत्र के प्रतिनिधियों को आश्वासन दिया कि आपकी जो भी समस्याएं हैं, सरकार उन पर विचार करने को तैयार है। इसके लिए उन्होंने एमपीईडीए को एक ज्ञापन प्रस्तुत करने को कहा ताकि इस क्षेत्र की आवश्यकताओं को सूचीबद्ध किया जा सके।

दूसरे दिन सम्मेलन को संबोधित करने वालों में केरल की मत्स्य पालन मंत्री श्रीमती जे.मर्कुट्टी अम्मा, संसद सदस्य हबी ईडन, एसईएआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगदीश वी. फोफंडी और पूर्व एमपीईडीए अध्यक्ष जोस सीरियक व टी.के. नायर भी थे। मर्कुट्टी अम्मा ने केरल में मत्स्य उद्योग को बढ़ावा

विपणन समाचार

देने के लिए केंद्र से उदार वित्तीय सहायता की मांग की। सांसद श्री ईडन ने कहा कि मत्स्य विभाग को केंद्रीय वाणिज्य मंत्रालय के साथ मिलकर काम करना चाहिए ताकि इस क्षेत्र को आकस्मिक चुनौतियों से उबरने में मदद मिल सके।

श्री फोफांडी ने केंद्र से आग्रह किया कि यदि आवश्यक हो तो उन सभी देशों में प्रतिनिधिमंडल भेजे जाएं जहां यह क्षेत्र निर्यात से जुड़ी समस्याओं का सामना कर रहा है। उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से अपील की कि समुद्री खाद्य निर्यातकों के हित में वह यूरोपीय संघ के साथ इस मुद्दे को उठाएं। उन्होंने कहा कि सरकार को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि चीनी बाजार भारत के लिए खुला रहे, विशेष रूप से इस तथ्य को देखते हुए कि चीन एक अहम आयातक बन चुका है। श्री फोफांडी ने प्राथमिक उत्पादकों और निर्यात से संबंधित नीतिगत मामलों पर भी ध्यान दिए जाने की अपील की क्योंकि यह क्षेत्र अत्यधिक प्रतिस्पर्धी माहौल में काम कर रहा है। उन्होंने इस क्षेत्र को ग्रीन जोन में लाने और सरकारी एजेंसियों द्वारा एक ही काम के दोहराव के परिणामस्वरूप नियमों की बाधा हटाने की भी वकालत की।

श्री सीरियक ने क्षेत्र के उच्चतम विकास को प्राप्त करने की

दिशा में हितधारकों की भूमिका की प्रशंसा की। श्री नायर ने आंध्र प्रदेश और कुछ अन्य राज्यों द्वारा केरल में श्रिम्प आधारित जलीय कृषि को लेकर किए गए प्रदर्शन की याद दिलाई और सलाह दी कि उत्पादकों को पर्यावरण के मुद्दों पर बेहद सतर्क रहने की जरूरत है।

आईआईएसएस-2020 के समापन पर एमपीईडीए अध्यक्ष के.एस. श्रीनिवास ने आयोजन को मील का पत्थर कहते हुए इसे बड़ी कामयाबी बताया। उन्होंने कहा कि वाणिज्य, मत्स्य पालन, पर्यावरण और स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालयों के संयुक्त प्रयासों से समुद्री खाद्य क्षेत्र में आशातीत सुधार हो सकता है। श्री श्रीनिवास ने याद दिलाया कि एमपीईडीए ने केन्द्र को देशभर के 25 मत्स्य बंदरगाहों के नवीनीकरण का प्रस्ताव दिया था। 2,500 करोड़ की लागत वाली इस परियोजना की शुरुआत में कोच्चि के थोपमपडुडी और आंध्र प्रदेश के निजामपट्टम बंदरगाह का उच्चीकरण और आधुनिकीकरण किया जाना है। हम अर्नस्ट एण्ड यंग नामक कंसल्टेंट के साथ इसकी डीपीआर (विस्तृत परियोजना रिपोर्ट) तैयार कर रहे हैं। यह दस्तावेज़ अगले माह प्रस्तुत कर दिया जाएगा। मंजूरी मिलने के साथ ही हम परियोजना पर आगे बढ़ जाएंगे।

एमपीईडीए की माइक्रोबायोलॉजी प्रयोगशाला का उद्घाटन

इस आयोजन की एक प्रमुख विशेषता कोच्चि में एमपीईडीए की पहली अत्याधुनिक माइक्रोबायोलॉजी प्रयोगशाला का उद्घाटन था। यह प्रयोगशाला समुद्री उत्पादों के प्रमाणीकरण के साथ ही देश के समुद्री खाद्य निर्यात को लक्षित स्तर तक ले जाने के प्रयासों को सुगम बनाने में मददगार होगी। केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्यमंत्री श्री रामेश्वर तेली ने प्रयोगशाला का उद्घाटन किया और कहा कि इससे हमारे समुद्री खाद्य क्षेत्र को, विशेषकर गुणवत्ता के मोर्चे पर वैश्विक निर्यात बाजार में कड़ी प्रतिस्पर्धा से उबरने में मदद मिलेगी।

इस प्रयोगशाला में उत्पादन काल सहित विभिन्न चरणों में सभी प्रकार के समुद्री भोजन का परीक्षण किया जा

सकेगा। किसी भी बैक्टीरिया की उपस्थिति से बचने के लिए निर्यात से पूर्व यह सुनिश्चित किया जा सकेगा कि निर्यातकों को घटिया गुणवत्ता के आधार पर विदेशों में अपने उत्पादों की अस्वीकृति का सामना न करना पड़े। ऐसी प्रयोगशाला इसलिए भी अनिवार्य हो गई थी कि संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोपीय संघ और अन्य प्रमुख आयातक अपनी आबादी की स्वास्थ्य रक्षा के मद्देनजर गुणवत्ता मानदंडों को कसते जा रहे हैं। एमपीईडीए के सचिव बी. श्रीकुमार ने बताया कि इस नई प्रयोगशाला को स्थापित करने में प्राधिकरण को सिर्फ एक वर्ष का समय लगा। यह माइक्रोबायोलॉजी प्रयोगशाला कोच्चि (केरल), भीमावरम और नेल्लोर (आंध्र प्रदेश) और भुवनेश्वर (ओडिशा) में पहले से मौजूद गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशालाओं के अलावा है।





केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्यमंत्री श्री रामेश्वर तेली ने कोच्चि में माइक्रोबायोलॉजी प्रयोगशाला का उद्घाटन किया।

जलीय कृषि के लिए प्रमाणन प्रणाली सफारी की शुरुआत

‘आईआईएसएस-2020’ का आयोजन जलीय कृषि के क्षेत्र में एमपीईडीए की एंटीबायोटिक मुक्त प्रमाणन प्रक्रिया ‘सफारी’ के लॉन्च का भी गवाह बना। यह प्रणाली लार्वा काल के साथ ही श्रिम्प के गुणवत्तापूर्ण उत्पादन की गारंटी देती है और अत्यधिक प्रतिस्पर्धी अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय श्रिम्प की गुणवत्ता को प्रमाणित करती है। यह शुरू से लेकर अंत तक की निदान प्रणाली है जो कि एमपीईडीए को देशभर की हैचरियों में लार्वा काल के साथ ही श्रिम्प की गुणवत्ता के परीक्षण का अधिकार देती है। सफारी प्रमाणन प्रणाली को डिजिटल आइडेंटिफिकेशन सोल्यूशन प्रोवाइडर सेंटाइजन टेक्नोलॉजीज के सहयोग से विकसित किया गया है। इससे सुपरबग्स नामक औषधि रोधी बैक्टीरिया की पहचान की दिशा में काम कर रहे शीर्षस्थ वैश्विक निकायों को भी मदद मिल सकेगी।

विश्व स्वास्थ्य संगठन और संयुक्त राष्ट्र एंटीबायोटिक-प्रतिरोधी बैक्टीरिया के एक उपभेद की पहचान को सार्वजनिक

स्वास्थ्य की एक बड़ी चिंता के रूप में देख रहे हैं, ऐसे में भारतीय किसानों को चाहिए कि वे किसी शासकीय निकाय द्वारा प्रमाणित हैचरी से ही एंटीबायोटिक मुक्त बीज खरीदें। यह संपूर्ण प्रमाणन प्रक्रिया केंद्र सरकार के ई-गवर्नेंस कार्यक्रम के अनुरूप ऑनलाइन होगी। वैसे ‘एमएससी’ और ‘बीएपी’ जैसी अनेक अपतटीय प्रमाणन प्रणालियां मौजूद हैं लेकिन ये महंगी होने के कारण छोटे और सीमांत भारतीय किसानों की पहुंच से बाहर हैं। नई प्रमाणन प्रणाली को लॉन्च करने का उद्देश्य देश के सभी जलीय किसानों को सस्ती प्रमाणन योजना उपलब्धी कराना है। इसके जरिये किसान स्वतंत्र रूप से देशभर में हैचरी द्वारा पेश किए गए बीज एंटीबायोटिक-मुक्त बीजों का ऑनलाइन पता लगाने में सक्षम हो सकेंगे। इस प्रणाली से निर्यात को काफी बढ़ावा मिल सकेगा क्योंकि हमारे निर्यातक वैश्विक स्तर पर व्यापार करते समय विश्वसनीय दस्तावेज के रूप में इस प्रमाणीकरण का उपयोग कर सकेंगे। यह प्रणाली जलीय कृषि के लिए निश्चित किए गए एफएओ के दिशा-निर्देशों के अनुरूप है।

आईआईएसएस-2020 में स्टॉलों की आकर्षक शृंखला

शो के दौरान सबसे अधिक ध्यान खींचा, हॉल में लगे स्टॉलों की आकर्षक शृंखला ने। कुल 330 स्टॉलों में उत्पादों और प्रोद्योगिकी की एक विशाल रेंज नजर आ रही थी। इन स्टॉलों में स्वचालित और आईटी-सहायता प्राप्त पूर्व-प्रसंस्करण, प्रसंस्करण और भंडारण इत्यादि पर आधारित उत्पादों को प्रदर्शित किया गया था। इसके अलावा कई स्टॉल ऐसे थे जो विभिन्न उपकरण और प्रमाणन/ परीक्षण जैसे क्षेत्रों के सेवा प्रदाताओं ने खोले हुए थे। विभिन्न जलीय कृषि प्रजातियों के विकास के विभिन्न चरणों में उपयोग के लिए वन्रामी श्रिम्प-चारे से भरे हुए मजेदार जार भी प्रदर्शित किए गए थे। आंध्र प्रदेश के देवी सीफूड्स लिमिटेड द्वारा उत्कृष्ट वैज्ञानिक विधि से विकसित इस चारे को श्रिम्प के संपूर्ण पोषण की आवश्यकता को ध्यान में रखकर विटामिन और खनिजों से संपुष्ट किया गया था। संतुलित अमीनो एसिड प्रोफाइल

वाला यह चारा श्रिम्प के तीन माह के जीवनकाल में पांच चरणों में दिया जाता है। एमपीईडीए की पहल पर सीफूड इंडिया ने भी अपना स्टॉल लगाया हुआ था जो कि देश भर से निर्यात होने वाले गुणवत्तापूर्ण समुद्री खाद्य उत्पादों की एकमुश्त खुदरा बिक्री करने वाली सुविधा है। वह सीएमएफआरआई, सीआईएफटी और एनआईएफपीएटीटी जैसे प्रमुख मत्स्य अनुसंधान संस्थानों द्वारा विकसित ‘रेडी-टू-कुक’ और ‘रेडी-टू-ईट’ मूल्यवर्धक उत्पादों को बेचती है। चेन्नई मेटेक्स लैब ने चारा, कृषि उत्पादों और जल का परीक्षण करने वाले उपकरणों की प्रदर्शनी लगाई हुई थी। यह कंपनी मत्स्य उत्पादों का परीक्षण करती है और सूक्ष्म जीवविज्ञानी जांच के अलावा उत्पादन का अंतिम निरीक्षण और कंटेनर की भी जांच करती है। गोदरेज ने भंडारण समाधान के लिए पैलेट रैकिंग उत्पादों जैसे ‘सेलेक्टिव डबल

विपणन समाचार

डीप' और 'शटल' को प्रदर्शित किया। इन रैकों में फ्रोजन किए जाने वाले उत्पादों को ले जाया जाता है। स्वीडिश समूह ओक्टोफ्रॉस्ट जिसका भारतीय कार्यालय फरीदाबाद (हरियाणा) में है, उसने फ्रोजन खाद्य-प्रसंस्करण लाइनों को प्रदर्शित किया हुआ था जिनमें टनल फ्रीजर, फ्लैश चिलर, आईएफ कुकर और आईएफ ब्लैंचर्स शामिल थे।

महाराष्ट्र में पुणे के निकट स्थित पुश इंजीनियरिंग ने फैक्ट्री-असेंबलड स्किड-माउंटेड आइस प्लांट इकाइयों को प्रदर्शित किया। ये इकाइयां स्थलों पर न सिर्फ उत्पादन अवधि को कम करती हैं, बल्कि जगह की जरूरत को भी पूरा करती हैं। गुजरात के वेरावल के महादेव एंटरप्राइज ने अपने स्टॉल में समुद्री खाद्य कारखानों में कार्यदशाओं के लिए कारगर

समझे जाने वाले साजो-सामान की नुमाइश लगाई हुई थी। इनमें टी-शर्ट, कोट, सलवारकुर्ता, कैप, एप्रन, गमबूटस, जूते, दस्ताने, मास्क और कान-स्ट्रिप्स शामिल थे। हैदराबाद के निकट स्थित मंजुश्री ग्रुप ने लचीली पैकेजिंग के लिए बाजार की जरूरतों को पूरा करने वाले उत्पादों को पेश किया था। मुंबई की जेआईएसएल ने उत्पादों की अंतिम पैकेजिंग या शिपिंग के लिए बहुउद्देशीय अनुप्रयोगों और लेबल प्रिंटर सहित माप-तौल के पैमानों को प्रदर्शित किया था। कोच्चि के उपनगरीय इलाके वन्नला के ट्राइटन ट्रेडिंग कॉरपोरेशन ने स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय खाद्य आपूर्तिकर्ताओं के लिए खाद्य योजकों के आयात, निर्यात, निर्माण और वितरण में अपनी विशेषज्ञता का प्रदर्शन करते हुए शानदार स्टॉल लगाया था।

आईआईएस-2020 की झलकियां







तकनीकी सत्र

‘आईआईएसएस-2020’ के तीनों दिन समुद्री खाद्य उद्योग की प्रगति और विकास से जुड़े तमाम संवेदनशील मुद्दों पर गहन मंथन चला। इसमें उद्योग के हितधारकों, नीति निर्माताओं और अन्य विशेषज्ञों ने भाग लिया। यह इन सभी के लिए संबंधित विषयों पर संवाद का एक महत्वपूर्ण मंच था। संवाद के विषय थे- संभावित बाजार और विनियामक वातावरण, लाइव श्रिम्प परिवहन, समुद्री खाद्य संबंधी एफडीए नियम, चिरस्थायी मत्स्यकी और नीली क्रांति का विकास, विदेशी बाजारों में भारतीय टूना की संभावनाएं और 2020 में उत्तरी अमेरिका और यूरोप में समुद्री भोजन का सतत निर्यात। विभिन्न सत्रों को भारत सहित फ्रांस, सिंगापुर, ब्रिटेन, अमेरिका, जापान, नीदरलैंड, जर्मनी और फीजी के अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों ने संबोधित किया।

इसके अलावा डेनफॉस इंडस्ट्रीज (प्रा.) लिमिटेड और टीसीएस द्वारा व्यावसायिक प्रस्तुतियां दी गईं। ‘संभावित बाजार और विनियामक वातावरण’ विषयक सत्र के दौरान विशेषज्ञों ने माना कि चीन उच्च और मध्यम वर्ग की बढ़ती उपस्थिति के साथ समुद्री भोजन आयात के लिए एक महत्वपूर्ण बाजार बना हुआ है। चीन की यह आबादी स्वस्थ भोजन के प्रति उत्सुक है। फ्रांस के समुद्री खाद्य सलाहकार कार्सन रॉपर ने ‘चीन और श्रिम्प की खेती’ विषय पर अपने विचार रखते हुए कहा कि पूर्वी एशियाई देश समुद्री उत्पाद का एक बड़ा बाजार हैं। यह बाजार अभी काफी हद तक अप्रयुक्त है। रॉपर ने कहा कि उनका ऐसा अनुमान है कि चीन दुनिया में समुद्री खाद्य के शीर्षस्थ 11 बाजारों में बना रहेगा। हालांकि समुद्री खाद्य उद्योग को इस दिशा में जागरूक होना चाहिए कि ‘न्यू रिटेल’ का रुझान ‘ऑनलाइन’

को तेजी से बदल रहा है। चीनी ई-कॉमर्स दिग्गज ‘अलीबाबा’ एक रिटेल इको तंत्र का निर्माण कर रहा है जो ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों के मेल से उपभोक्ता को एक कर रहा है। हालांकि वक्ताओं ने सावधान किया कि समुद्री खाद्य व्यापार में एक भागीदार के तौर पर चीन पर आंख मूंदकर भरोसा नहीं किया जाना चाहिए। एक अन्य सत्र ‘टूना एक्सपोर्ट वैल्यू चेन: बैटर हार्वेस्ट प्रैक्टिसेज’ पर केंद्रित था। श्री रॉपर ने ‘कंट्री एण्ड ब्रांड लायल्टी: एन एक्सप्लोरेशन ऑफ सक्सेसफुल एण्ड नॉन सक्सेसफुल नेशनल एण्ड कॉरपोरेट सीफूड मार्केटिंग इनिशियेटिव्स’ विषयक प्रस्तुति के साथ इसकी इसकी शुरुआत की। सत्र के अन्य वक्ताओं में सिंगापुर के ‘एक्वाकल्चर इनोवेशन सेंटर’ के डॉ. ली ची वे थे जिन्होंने ‘लाइव श्रिम्प ट्रांसपोर्टेशन’ विषय पर अपने विचार रखे। ‘सीफूड के एफडीए नियमों के अवलोकन’ विषय पर अंतरराष्ट्रीय संबंध विशेषज्ञ क्रिस्टोफर प्राइडी और ‘देश के विनियमों और व्यापार पर प्रभाव’ विषय पर एमपीईडीए के उप निदेशक मार्केटिंग आर.एम मांडलिक ने बोला। सत्र का संचालन केंद्रीय मत्स्य संस्थान के निदेशक डॉ. सी.एन. रविशंकर ने किया। श्री मांडलिक ने बताया कि एमपीईडीए किस प्रकार देश के जलीय किसानों के लिए समुद्री खाद्य मानकों व नियमों के प्रवाह को सुनिश्चित करता है। उन्होंने बताया कि हमारे यहां सूचनाओं का प्रसार तंत्र दुरुस्त है और किसानों को समय पर संदेश मिल जाता है। हां, हमें सिर्फ यह करना होता कि किसान उस अनुरूप कार्य करने को प्रेरित हों। हम इस दिशा में लगातार काम कर रहे हैं। प्रमाणन, पारगम्यता और मूल्य संवर्धन पर भी एक सत्र था जिसमें आंध्र प्रदेश के भारत की समुद्री खाद्य राजधानी बने रहने की क्षमता पर प्रकाश डाला गया।



आईसीएआर-केंद्रीय मत्स्य प्रोद्योगिकी संस्थान(सीआईएफटी), कोच्चि के निदेशक डॉ. सी.एन. रविशंकर



फ्रांस में स्वतंत्र रूप से काम करने वाले सलाहकार कार्सन रॉपर

विपणन समाचार



जलीय कृषि अनुसंधान केन्द्र, सिगापुर के डॉ. ली ची वी



अंतरराष्ट्रीय संबंध विशेषज्ञ, यूएसएफडीए, भारत क्रिस्टोफर प्राइडी



ईआईसी, नई दिल्ली के उप निदेशक राजू मांडलिक



केरल यूनिवर्सिटी ऑफ़ फिशरीज एण्ड ओशन स्टडीज, कोच्चि के कुलपति प्रो. ए. रामचन्द्रन



सीफूड वाच साइंस, यूएसए की निदेशक वेंडी नॉर्डन



जापान फिशरीज एसोसिएशन, टोक्यो के काजुहिको उत्सुमी



नीदरलैंड के स्टैंडर्ड्स कोऑर्डिनेटर मार्सिलो हिडाल्गो



मैरीन स्टिक्टर्डशिप काउंसिल, लंदन के भारतीय सलाहकार डॉ. रजीत सुशीलम

विपणन समाचार



ब्लू सेंसस, जर्मनी के यूडा सेंसकोवस्की



इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च, नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक (मैरीन फिशरीज) डॉ. प्रवीण पुथरन



जूड फूड्स इंडिया प्रा.लि. कन्याकुमारी, भारत के शाजी मैथ्यू



ट्राइपेसेफिक मैरीन लि. फीजी के मुख्य कार्यकारी सतीश क्षीरसागर



मैसर्स लक्ष्मीकुमारन एण्ड श्रीधरन, चेन्नई के पी. श्रीधरन



मैसर्स लक्ष्मीकुमारन एण्ड श्रीधरन, चेन्नई के आर. श्रीनिवासन



विपणन समाचार



विपणन समाचार

अगला आईआईएसएस 2022 में कोलकाता में होगा

अगला आईआईएसएस 2022 में कोलकाता में आयोजित किया जाएगा। इस द्विवार्षिक कार्यक्रम का उद्देश्य एक्वाकल्चर में नवीनतम तकनीकी हस्तक्षेपों को दर्शाना और उन मामलों

पर विचार-विमर्श करना है जो देश के समुद्री उत्पाद क्षेत्र को प्रोत्साहन प्रदान कर सकते हैं।

वर्ष 2017-18 के लिए पुरस्कार विजेताओं की सूची

निर्यातकों की उपलब्धियों को पहचान मिले, इसके लिए एमपीईडीए ने हाल ही में वर्ष के सर्वश्रेष्ठ निर्यातकों के लिए एमपीईडीए चैयमैन्स अवार्ड स्थापना की है। वर्ष 2018-19 के लिए, इसे मैसर्स गद्रे मरीन एक्सपोर्ट प्रा.लि. रत्नागिरी, महाराष्ट्र को प्रदान किया गया। पुरस्कारों के क्रम में एक अन्य नई पहल लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड थी जो केरल

के अमलगाम समूह के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक अब्राहम जे. थरक्कन को दिया गया। केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री सोम प्रकाश और केरल की मत्स्य मंत्री जे. मर्कुट्टी अम्मा ने उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए 60 कंपनियों और व्यक्तियों को एमपीईडीए पुरस्कार प्रदान किए।

2017-18 के लिए पुरस्कारों की सूची

Category	Position	Awardee
I. Overall Exports		
(A) Value wise	1st	Devi Seafoods Ltd., Andhra Pradesh
	2nd	Nekkanti Seafoods Ltd., Andhra Pradesh
(B) Quantity wise	1st	Mukka Seafood Industries Ltd, Karnataka
	2nd	Ulka Seafoods Pvt. Ltd., Maharashtra
II. Commodity Wise		
(A) Frozen Shrimp	1st	Devi Seafoods Ltd., Andhra Pradesh
	2nd	Nekkanti Seafoods Ltd., Andhra Pradesh
(B) Frozen Cephalopods	1st	Profand Vayalat Marine Exports Pvt. Ltd., Kerala
	2nd	Silver Seafood, Gujarat
(C) Frozen Fin Fish	1st	Sun Exports, Gujarat
	2nd	Silver Seafood, Gujarat
(D) Chilled Marine Products	1st	Aqua World Exports Pvt. Ltd., Tamil Nadu
	2nd	Gold Marine Exports Pvt. Ltd., Tamil Nadu
(E) Dried Marine Products		
(i) Dried Marine Products other than Fish Meal, Fish Oil and Allied products	1st	Sanrhy Exim Pvt. Ltd., West Bengal
	2nd	Kolkata Marine Products Pvt. Ltd., West Bengal
(ii) Fish Meal, Fish Oil and Allied Products	1st	United Marine Products, Karnataka
	2nd	Mukka Seafood Industries Ltd, Karnataka
(F) Molluscs Other Than Cephalopods	1st	Seaboy Fisheries Pvt. Ltd., Kerala
	2nd	Capithan Exporting Co., Kerala
(G) Frozen Surimi	1st	Ulka Seafoods Pvt. Ltd., Maharashtra
	2nd	Amarsagar Seafoods Pvt. Ltd., Gujarat
III. Live Marine Products Other Than Aquarium Fish	1st	S A T Marine Export, Tamil Nadu
	2nd	Crescent Seafoods, Tamil Nadu
IV. Aquarium Fish	1st	Malabar Tropicals, West Bengal
	2nd	Aqualine Exports, Kerala
V. Special Efforts		
(A) Value Added Products	1st	Accelerated Freeze Drying Co. Ltd., Kerala

विपणन समाचार

	2nd	HIC-ABF Special Foods Pvt. Ltd., Kerala
(B) New Product	1st	Andhra Medi Pharma India Pvt. Ltd, Andhra Pradesh Item Glucosamine
(D) Woman Entrepreneur	1st	Ifaawin Marine Export India Pvt. Ltd., Tamil Nadu

वर्ष 2018-19 के लिए पुरस्कारों की सूची

Category	Position	Awardee
I. Overall Exports		
(A) Value wise	1st	Falcon Marine Exports Ltd., Odisha
	2nd	Devi Sea Foods Ltd., Andhra Pradesh
(B) Quantity wise	1st	Gadre Marine Export Pvt. Ltd., Maharashtra
	2nd	Mukka Seafood Industries Ltd, Karnataka
II. Commodity Wise		
(A) Frozen Shrimp	1st	Falcon Marine Exports Ltd., Odisha
	2nd	Devi Sea Foods Ltd., Andhra Pradesh
(B) Frozen Cephalopods	1st	Profand Vayalat Marine Exports Pvt. Ltd., Kerala
	2nd	Amulya Seafoods, Tamil Nadu
(C) Frozen Fin Fish	1st	Sun Exports, Gujarat
	2nd	St. Peter & Paul Seafood Exports Pvt. Ltd., Tamil Nadu
(D) Chilled Marine Products	1st	Aqua World Exports Pvt. Ltd., Tamil Nadu
	2nd	Gold Marine Exports Pvt. Ltd., Tamil Nadu
(E) Dried Marine Products		
(i) Dried Marine Products other than Fish Meal, Fish Oil and Allied products	1st	Kolkata Marine Products Pvt. Ltd., West Bengal
	2nd	K M C Enterprise, Maharashtra
(ii) Fish Meal, Fish Oil and Allied Products	1st	Mukka Sea Food Industries Ltd., Karnataka
	2nd	United Marine Products, Karnataka
(F) Molluscs Other Than Cephalopods	1st	Seaboy Fisheries Pvt. Ltd., Kerala
	2nd	AvlaNettos Exports, Kerala
(G) Frozen Surimi	1st	Gadre Marine Export Pvt. Ltd., Maharashtra
	2nd	Ulka Seafoods Pvt. Ltd., Maharashtra
III. Live Marine Products Other Than Aquarium Fish	1st	Puja Export House, West Bengal
	2nd	Scanet Trading Pvt. Ltd., Tamil Nadu
IV. Aquarium Fish	1st	Malabar Tropicals, West Bengal
	2nd	Aqualine Exports, Kerala
V. Special Efforts		
(A) Value Added Products	1st	Gadre Marine Export Pvt. Ltd., Maharashtra
	2nd	Accelerated Freeze Drying Co. Ltd., Kerala
(C) New Market	1st	BlueFin Frozen Foods Pvt. Ltd, Maharashtra - Country : Jamaica
(D) Woman Entrepreneur	1st	Vasai Frozen Foods, Maharashtra
VI. Chairman's special award for the most Responsible Exporter of the year	1st	Gadre Marine Export Pvt. Ltd., Maharashtra
VII. Life Time Achievement Award	1st	Mr. Abraham J Tharakan, Chairman & Managing Director, Amalgam Group







सर्वश्रेष्ठ निर्यातक के लिए 'चेयरमैनस स्पेशल अवार्ड' प्राप्त करते मैसर्स गाड़ू मैरीन एक्सपोर्ट प्रा.लि. रत्नागिरी



'एमपीईडीए लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' प्राप्त करते अमलगाम समूह के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक अब्राहम जे. थराकान



एमपीईडीए अध्यक्ष ने मैरीन शिपर्श मीट-2020 का उद्घाटन किया



मैरीन शिपर्श मीट का उद्घाटन



मैरीन शिपर्श मीट के दौरान पैनल परिचर्चा

जीएमआर हैदराबाद एयर कार्गो के 'मैरीन शिपर्श मीट-2020' के तीसरे संस्करण का उद्घाटन विजाग में 24 जनवरी 2020 को एमपीईडीए के अध्यक्ष श्री के.एस. श्रीनिवास आईएस ने किया। मीट का उद्देश्य समुद्री निर्यातकों व आयातकों, हैचरियों, एयरलाइनों, हवाई अड्डों और लॉजिस्टिक्स सेवा प्रदाताओं के लिए एक आदर्श मंच तैयार करना था ताकि वे आकांक्षाओं, चुनौतियों और अवसरों सहित व्यापारिक अंतर्दृष्टि को समझ सकें।

इस अवसर पर एक पैनल चर्चा हुई जिसमें जीएमआर कार्गो के सीईओ सौरभ कुमार, स्पाइसजेट कार्गो के सीईओ संजीव गुप्ता, एमपीईडीए के अध्यक्ष के.एस. श्रीनिवास, प्रधान वैज्ञानिक और सीआईएफटी के वैज्ञानिक प्रभारी डॉ. आर. रघु प्रकाश, एए सीफूड्स के एमडी व तमिलनाडु फिशरमैन कांग्रेस की राज्य इकाई के सचिव डॉ. आई. इस्माइल, सीफूड एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन के सचिव पवन कुमार, सचिव, कार्गो सेल्स एंड सर्विसेज हैदराबाद के प्रमुख प्रवीण कुमार और राज्य मत्स्य विभाग के संयुक्त निदेशक फणी प्रकाश ने भाग लिया।

जीएमआर कार्गो की वाणिज्य विकास प्रमुख सुश्री पारुल कुलश्रेष्ठ ने स्वागत भाषण दिया। जीएमआर कार्गो के सीईओ सौरभ कुमार ने सभी प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए चर्चा की शुरुआत की और हैदराबाद एयर कार्गो टर्मिनल व इसकी विस्तार योजनाओं पर एक अवलोकन प्रस्तुत किया। उन्होंने विशेष रूप से समुद्री उत्पादों का संचालन करने वाले टर्मिनल के साथ-साथ नए कार्गो टर्मिनल की भावी योजना

का भी खुलासा किया। स्पाइसजेट कार्गो के सीईओ संजीव गुप्ता ने आंध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्रों से उत्पादित श्रिम्प की आवाजाही के लिए समर्पित घरेलू कार्गो मालवाहक सेवा शुरू करने की घोषणा की। यह मालवाहक एक दिन के अंतराल में हैदराबाद - विशाखापट्टनम - कोलकाता और हैदराबाद-विशाखापट्टनम-सूरत के बीच चला करेगा। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि घरेलू एयर कार्गो के इतिहास में ऐसा पहली बार है कि कोई एयरलाइन एक निर्धारित समय के लिए एक विशिष्ट वस्तु हेतु समर्पित मालवाहक सेवा शुरू कर रही है।

एमपीईडीए के अध्यक्ष के.एस. श्रीनिवास, आईएस ने भारत में विशेष रूप से आंध्र प्रदेश में समुद्री उत्पादों के वर्तमान बाजार की व्याख्या की। उन्होंने एमपीईडीए-अनुमोदित पैक हाउस व अन्य सहूलियतें देकर व्यापार को सुविधाजनक बनाने की योजनाओं पर भी चर्चा की। उन्होंने संसाधनों के बेहतर उपयोग पर जोर दिया ताकि समुद्री उत्पाद अपनी ताजगी और गुणवत्ता न खोएं। एमपीईडीए चेयरमैन ने एयरपोर्टों के जरिए सीफूड निर्यात और भारत से लाइव / चिल्ड फिश निर्यात को बढ़ाने की दिशा में किए जाने वाले जरूरी उपायों पर अपनी प्रस्तुति भी दी। सीआईएफटी के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. आर. रघु प्रकाश ने विशेष रूप से पैकेजिंग में समुद्री प्रसंस्करण की पूरी प्रक्रिया के वैज्ञानिक तौर-तरीकों पर अपना दृष्टिकोण साझा किया। उन्होंने सीआईएफटी और हवाई अड्डों व पैक हाउस आदि के बीच एक एमओयू पर हस्ताक्षर किए जाने का सुझाव दिया ताकि हैदराबाद हवाई अड्डे पर दीर्घकालीन सुविधाओं को प्राप्त



मैरीन शिपर्स मीट में उद्घाटन भाषण देते एमपीईडीए के अध्यक्ष के.एस. श्रीनिवास, आईएसएस

किया जा सके। एए सी फूड्स के एमडी तथा तमिलनाडु फिशरमैन कांग्रेस के राज्य सचिव डॉ.आई. इस्माइल ने बताया कि वह हैदराबाद हवाई अड्डे से निर्यात शुरू करेंगे और बहुत जल्द ही उनके कुल निर्यात का आधा हैदराबाद से ही होने लगेगा। सीफूड एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन के सचिव पवन कुमार ने निर्यातकों की वर्तमान चुनौतियों पर चर्चा की। उन्होंने समुद्री उत्पादों के निर्यात को सुविधाजनक बनाने के लिए सभी नियामक निकायों के वृहद प्रयास का आह्वान किया। थाई एयरवेज हैदराबाद के कार्गो सेल्स एंड

सर्विस के प्रमुख प्रवीण कुमार ने समुद्री उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए निर्यातकों की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। राज्य मत्स्य विभाग के संयुक्त निदेशक फणी प्रकाश ने कहा कि समुद्री उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए आंध्र प्रदेश सभी आवश्यक सुविधाएं प्रदान कर रहा है। उन्होंने बताया कि राज्य द्वारा आधारभूत ढांचे और नीति-संबंधी मुद्दों को प्राथमिकता के साथ संबोधित किया जा रहा है। जीएमआर कार्गो के सीईओ सौरभ कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।



मैरीन शिपर्स मीट में शामिल प्रतिनिधिगण



‘बंगाल फिश फेस्ट-2020’ के दौरान हितधारकों और निवेशकों के साथ बैठक



खारा जलक्षेत्र की चुनौतियां व अवसर विषयक परिचर्चा

पश्चिम बंगाल सरकार के मत्स्य विभाग ने '5वें बंगाल फिश फेस्ट' का आयोजन किया। कोलकाता के नलबान फूड पार्क, साल्ट लेक में 10 से 12 जनवरी 2020 तक चले इस फेस्ट को भारतीय चैंबर ऑफ कॉमर्स के साथ संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था। आयोजन के पीछे घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजार के संपर्कों की तलाश, नूतन व उन्नत तकनीकों को बढ़ावा देने के लिए निवेश और पश्चिम बंगाल के मत्स्य और समुद्री क्षेत्रों के सभी प्रमुख हितधारकों जानकारियों का प्रसार इत्यादि उद्देश्य

शामिल थे। इस दौरान विभिन्न सत्र आयोजित किए गए। हर सत्र में 45-50 किसानों / निवेशकों ने शिरकत की। एमपीईडीए के कोलकाता क्षेत्रीय प्रभाग के उपनिदेशक अर्चिमान लाहिड़ी ने खारा जलक्षेत्र की चुनौतियां व अवसर विषयक सत्र में भाग लिया। इस सत्र के दौरान निर्यात और श्रिम्प विनियमन की आवश्यकता विषयक प्रस्तुति दी गई थी। इसके अलावा पश्चिम बंगाल में समुद्री निर्यात क्षमता और निवेश के अवसर विषय पर भी एक प्रस्तुति दी गई।



कोलकाता में तीन दिवसीय बंगाल फिश फेस्ट 2020

‘बंगाल फिश फेस्ट’ के पांचवें संस्करण का आयोजन 10 से 12 जनवरी 2020 तक नलबान फूड पार्क साल्ट लेक, कोलकाता में हुआ। इसे पश्चिम बंगाल सरकार के मत्स्य विभाग और भारतीय चैंबर ऑफ कॉमर्स ने मिलकर आयोजित किया। इस उत्सव का उद्घाटन 10 जनवरी को किया गया। स्वागत भाषण पश्चिम बंगाल मत्स्य विभाग के मुख्य सचिव डॉ. एस. किशोर, आईएस ने दिया। भारतीय चैंबर ऑफ कॉमर्स के महानिदेशक डॉ. राजीव सिंह और पश्चिम बंगाल की माननीय मुख्यमंत्री के सलाहकार (कृषि और संबद्ध क्षेत्र) प्रदीप मजूमदार ने भी उद्घाटन समारोह को संबोधित किया।

समारोह के मुख्य अतिथियों में बिधाननगर नगर निगम की

माननीय महापौर श्रीमती कृष्णा चक्रवर्ती, पश्चिम बंगाल सरकार के दमकल व आपातकालीन सेवा विभाग के राज्यमंत्री सुजीत बोस और पश्चिम बंगाल विधानसभा के माननीय अध्यक्ष बिमान बंद्योपाध्याय थे। समारोह की अध्यक्षता पश्चिम बंगाल सरकार के मत्स्य विभाग के माननीय मंत्री चन्द्र नाथ सिन्हा ने की। निदेशक, मत्स्य विभाग श्रीमती ईशा सेनगुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापित किया। समारोह में विभिन्न कंपनियों, व्यावसायिक घरानों, मत्स्य विश्वविद्यालय व संस्थानों, मछुआरों, हितधारकों और जनप्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर वर्ष 2017 के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए मत्स्य किसानों, मछुआरों, सहकारी समितियों और सीएफसीएस इत्यादि को भी सम्मानित किया गया।



बंगाल फिश फेस्ट 2020 में एमपीईडीए



बीएफएफ 2020 में एमपीईडीए के स्टॉल का नजारा



उपनिदेशक आर्चिमान लाहिड़ी और जॉनसन डी. क्रूज किसानों के साथ विचार-विमर्श करते हुए

बंगाल फिश फेस्ट में एमपीईडीए की भागीदारी ने विशेष ध्यान आकर्षित किया। संवर्धन प्रथाओं पर बीएमपी, एक्वाकल्चर में विविधता, सीफूड में मूल्यवर्धन, एमपीईडीए द्वारा फिल्मों के वीडियो प्रदर्शन के साथ लगाए गए स्टॉल के मुख्य विषय थे। 7-8 फरवरी तक कोच्ची में आयोजित 'इंडिया इंटरनेशनल सीफूड शो

2020' के लिए कैन्वसिंग को भी फेस्ट स्थल पर सफलतापूर्वक किया गया। एमपीईडीए प्रकाशन और चार्ट बिक्री और संदर्भ हेतु आगंतुकों के लिए प्रदर्शित किए गए थे। अन्य आगंतुकों और छात्रों के अलावा, घटना के तीन दिनों के दौरान लगभग 80 महत्वपूर्ण बातचीत हुई।



एमपीईडीए अध्यक्ष ने काकीनाड़ा बंदरगाह का दौरा किया



काकीनाड़ा बंदरगाह का मौके पर जाकर निरीक्षण करते एमपीईडीए के अध्यक्ष के.एस. श्रीनिवास

एमपीईडीए के अध्यक्ष के.एस. श्रीनिवास, आईएस ने 25 जनवरी 2020 को मत्स्य बंदरगाह काकीनाड़ा का दौरा किया। उनके इस दौरे का मकसद था, मछुआरों द्वारा पकड़ी गई मछलियों के बंदरगाह पर उतरने के दौरान हाइजीन की स्थिति की पड़ताल और यहां ढांचागत सुविधाओं के विकास की जानकारी प्राप्त करना। काकीनाड़ा पोर्ट के निदेशक, मत्स्यकी विभाग के संयुक्त निदेशक व अतिरिक्त निदेशक, नेटफिश-एचडीसी के एफडीओ तथा एमपीईडीए के अधिकारीगण भी इस दौरे में उनके साथ थे। बंदरगाह की समस्याओं और जरूरतों के

बारे में पोर्ट निदेशक ने एमपीईडीए अध्यक्ष को अवगत कराया। इस पर अध्यक्ष महोदय ने बंदरगाह में सुविधाओं और स्वच्छता के मानकों में सुधार के लिए आवश्यक समझी जा रही सभी बातों को सूचीबद्ध करने को कहा ताकि इन पर आगे कार्यवाही की जा सके। श्री श्रीनिवास ने राज्य के मत्स्य अधिकारियों से मछली पकड़ने संबंधी सूचना प्रणाली में सुधार का आग्रह किया। उन्होंने दैनिक रूप से पकड़ी जाने वाली मछलियों के मामले में सूचना प्रणाली के बेहतर कार्यान्वयन के लिए नेटफिश की सराहना की।



माइक्रोप्लास्टिक: समुद्री खाद्य के लिए उभरती चुनौती

बी. चाणक्य नायडू और के.ए. मार्टिन जेवियर

डिपार्टमेंट ऑफ पोस्ट-हार्वैस्ट टेक्नोलॉजी, फिशरी रिसोर्स हार्वैस्ट एण्ड पोस्टहार्वैस्ट मैनेजमेंट डिविजन, आईसीएआर- सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ फिशरीज एजुकेन, वर्सावा, मुंबई-400061, महाराष्ट्र

परिचय

1950 के दशक में व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य प्लास्टिक तेजी से विकसित होकर महत्वपूर्ण पैकेजिंग सामग्री बनता चला गया। इसका प्रमुख कारण था, इसकी बहु-उपयोगिता। इसके अलावा मजबूती, हल्कापन, टिकाऊपन, आसान उत्पादन और कम लागत के कारण भी प्लास्टिक हमारे रोजमर्रा के जीवन में गहरी पैठ बनाता चला गया। अब यह हमारे जीवन का अनिवार्य हिस्सा बन चुका है। पैकेजिंग सामग्री के लिए प्लास्टिक की शुरुआत के बाद से ही इसके उत्पादन में लगभग 8.7 प्रतिशत की सालाना वृद्धि हुई है और अब यह 600 अरब अमेरिकी डॉलर के वैश्विक उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है। 1950 में दुनिया में सिर्फ 2 मिलियन टन प्लास्टिक का उत्पादन किया जा रहा था। तब से इसका वार्षिक उत्पादन लगभग 200 गुना बढ़ गया है जो 2018 में 381 मिलियन टन तक पहुंच गया। 2017 में उत्पादित प्लास्टिक की कुल मात्रा 8.3 अरब टन थी। यह 6.3 बिलियन प्लास्टिक कचरे में बदल गई थी। उस कचरे के केवल 9 प्रतिशत का पुनर्चक्रण किया गया और 12 प्रतिशत को जलाया गया। 79 प्रतिशत कचरा लैंडफिल या पर्यावरण में समाहित हो गया (प्लास्टिक यूरोप, 2019)। शोधकर्ताओं के अनुसार 1950 के दशक की शुरुआत से लगभग 8.3 बिलियन टन प्लास्टिक मनुष्य द्वारा उत्पन्न किया गया। दशकों से समुद्री वातावरण में उनके निरंतर निर्वहन के कारण यह प्लास्टिक समुद्री वातावरण में व्याप्त है और समुद्र के किनारे से लेकर समुद्री सतह और समुद्र तल तक डेरा डाल चुका है। इस प्रकार यह एक तरह से संपूर्ण पर्यावरण के लिए खतरा बन गया है। साल 2050 तक वजन के आधार पर कुछ महासागरों में प्लास्टिक की उपस्थिति मछली के भंडार से आगे निकल जाएगी (मूर एट अल- 2001)।

समुद्री वातावरण में माइक्रोप्लास्टिक: वैश्विक पर्यावरणीय मुद्दा

बड़े प्लास्टिक कण जो अंततः महासागरों में पहुंच जाते हैं, सूर्य के प्रकाश की फोटो-ऑक्सीकरण प्रक्रिया और पानी की लहरों में घर्षण के कारण समय के साथ छोटे सूक्ष्म और नैनो प्लास्टिक कणों में तब्दील हो जाते हैं। माइक्रोप्लास्टिक को सामग्री या इसके एक टुकड़े की लंबाई को 1यूएम से 5000 यूएम (5 मिमी) के रूप में आंका गया है। आज समुद्र में प्लास्टिक का मलबा अत्यधिक प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। 2014 में, दुनिया के महासागरों में प्लोटिंग प्लास्टिक कणों की अनुमानित संख्या 5.25 ट्रिलियन थी जिसमें से 4.85 ट्रिलियन कण माइक्रोप्लास्टिक के थे। (जीईएसएएमपी 2019) माइक्रोप्लास्टिक को प्राइमरी और

सेकेंडरी माइक्रोप्लास्टिक के रूप में वर्गीकृत किया जा रहा है। प्राथमिक माइक्रोप्लास्टिक वे प्लास्टिक के कण होते हैं, जिन्हें माइक्रोबीड्स, कैप्सूल, फाइबर या छरों के रूप में निर्मित किया जाता है और इनका उपयोग कई कॉस्मेटिक उत्पादों व कई तरह की प्लास्टिक सामग्री के निर्माण में किया जाता है। ये कई जैविक, रासायनिक और भौतिक प्रक्रियाओं के कारण छोटे प्लास्टिक कणों में विघटित हो जाते हैं। एक समय के पश्चात यही कण अपना स्वरूप बदलने लगते हैं। इनकी यह अवस्था सेकेंडरी माइक्रोप्लास्टिक के रूप में जानी जाती है।

समुद्री जीवों और मानवों में माइक्रोप्लास्टिक जैविक जमाव व अभिवृद्धि

एक बड़ी चिंता का कारण यह है कि माइक्रोप्लास्टिक का आकार कई जलीय जीवों को अपने शिकार की तरह लगता है। इस कारण जोप्लांकटन, अकशेरुकी, मछली, सीप, पक्षी, सिटासिन और बड़े स्तनधारियों सहित अधिकांश जलीय जीव इसे भोजन समझकर खाने लगते हैं। ट्रोपिक-स्तरीय जीवों जैसे कि मसल्स, ऑयस्टर या कोपेपोड और

छोटी मछलियां माइक्रोप्लास्टिक को खूब खाती हैं। बड़े जीवों द्वारा चारे के रूप में इस्तेमाल की जाने वाली इन मछलियों के रूप में यह माइक्रोप्लास्टिक उन तक भी पहुंच जाता है। जाहिर है, मछलियों और जलीय कृषि के लिए व्यावसायिक महत्व की प्रजातियों के माध्यम से मानव भी इस माइक्रोप्लास्टिक के संपर्क में आ जाता है। लगभग 690

*E-mail: martinxavier@cife.edu.in

संकेंद्रित क्षेत्र

समुद्री प्रजातियों का समुद्री कूड़े और माइक्रोप्लास्टिक्स से सामना होता है। प्लास्टिक में विभिन्न प्रकार के रासायनिक योजक होते हैं जिनमें फिलर्स, प्लास्टिसाइजर, लो-रिटार्डेंट, यूवी व थर्मल स्टेबलाइजर पिगमेंट और रोगाणुरोधी एजेंट शामिल हैं। इनका प्रयोग निर्माण प्रक्रिया के दौरान वांछित गुणों मानदंडों को हासिल करने के लिए किया जाता है। ये कई स्वास्थ्य संबंधी विकारों को जन्म दे सकते हैं। इनसे जीवों के हार्मोनल संतुलन में परिवर्तन आ सकता है। माइक्रोप्लास्टिक्स के भौतिक और रासायनिक कण सतह पर प्रदूषकों को भी पनपाते हैं जो कि दीर्घकालीन रूप में जीवों के लिए अनिष्टकारी हैं। भारतीय समुद्र तटों, तटीय जल और व्यावसायिक रूप से उपलब्ध फिनफिश और शेलफिश (विशेष रूप से श्रिम्प और वेबलेक्स) पर किए गए कई शोध अध्ययनों में इन जीवों में माइक्रोप्लास्टिक का पता चला है। हाल के शोध से पता चलता है कि प्रत्येक सप्ताह औसतन प्रत्येक मानव 5 ग्राम प्लास्टिक का उपयोग कर रहा है जो

कि माइक्रोप्लास्टिक के रूप में क्रेडिट कार्ड के आकार के बराबर है (यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूकैसल, ऑस्ट्रेलिया, 2019 की रिपोर्ट)। विभिन्न अध्ययनों ने समुद्री जीवों की एक विस्तृत शृंखला (माइक्रोबाडेला एट अल, 2017) में माइक्रोप्लास्टिक्स की उपस्थिति की पुष्टि की है। इन माइक्रोप्लास्टिक्स का सेवन जीवों के लिए बेहद खतरनाक हो सकता है क्योंकि ये उनके पाचन तंत्र, ऑक्सीडेटिव और पैथोलॉजिकल प्रक्रिया में रुकावट पैदा कर सकते हैं और उनकी विकास दर व प्रजनन संबंधी प्रक्रिया को रोक सकते हैं। उपलब्ध अध्ययनों से पता चलता है कि 20 सबसे महत्वपूर्ण प्रजातियों में से 11 में गैस्ट्रो-आंत्र पथ में माइक्रोप्लास्टिक देखा गया है और फिनफिश जिसकी पहचान वैश्विक समुद्री मत्स्यकी (एफएओ, 2016) और यूरोप के तटीय जल की श्रिम्प व लोबोस्टर मछलियों के रूप में की जाती है, (डेविस एट अल, 2015) उसमें भी माइक्रोप्लास्टिक की मौजूदगी पाई गई।

व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण समुद्री खाद्य पदार्थों में माइक्रोप्लास्टिक

भारतीय समुद्री जल में माइक्रोप्लास्टिक के फैलाव का असर मानव स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा और भारतीय अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए घातक होने के साथ ही व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण जीवों जैसे श्रिम्प, सीपियों और परभक्षी मछलियों आदि पर भी पड़ता है। इन जीवों के लिए सीपियां उत्कृष्ट चारा हैं जिनमें उनकी विशेष रुचि होती है। उनकी यही लालसा उन्हें वाटर कॉलम में मौजूद माइक्रोप्लास्टिक्स के संपर्क में लाती है। सीपियों में माइक्रोप्लास्टिक का मछली की तुलना में 27 गुना अधिक है और वे लगभग 24 लीटर प्रतिदिन समाहित करती है। इस तरह सूक्ष्म कणों के रूप में माइक्रोप्लास्टिक उनकी आंत में जमा होने लगता है। (क्लेसेन्स एट अल, 2013)। इस प्रकार देखें तो उनका

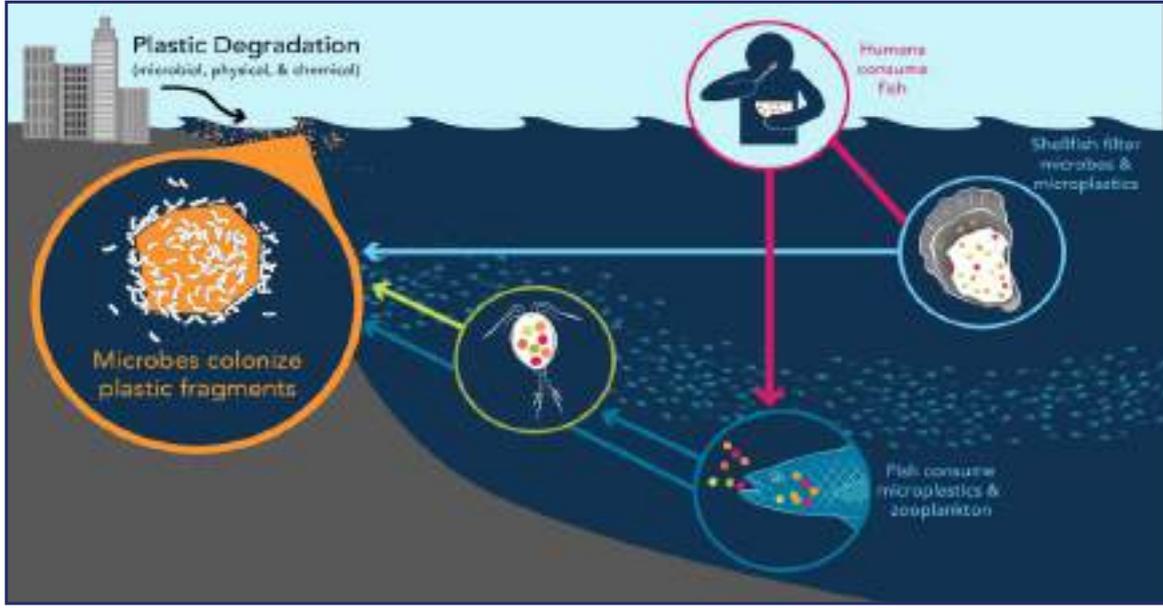
उपयोग उस क्षेत्र की प्लास्टिक प्रदूषण स्थिति का आंकलन करने के लिए भी किया जा सकता है। व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण कुछ सीपियों और गैस्ट्रोपोड जैसे कि ग्रीन मसल्स (पेर्ना विरीडिस), येलो क्लैम (मेरिट्रिक्स कास्टा) आदि में माइक्रोप्लास्टिक पाए जाने की सूचना है। चीनी समुद्री जल में व्यावसायिक रूप से उपयोगी सीपियों में यह मात्रा 2.1 से 10.5 आइटम / ग्राम (जियाना ली एट अल, 2016) है और फ्रांस, जर्मनी, बेल्जियम, नॉर्वे के यूरोपीय जल की सीपियों में औसतन 0.5 से 1 आइटम / ग्राम तक है। (वान कॉवेनबर्ग एट अल, 2014)। यह स्थिति विभिन्न बाजारों को सख्त नियम बनाने को प्रेरित करेगी।

मानव स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा और भारतीय अंतरराष्ट्रीय व्यापार

वर्ष 2017-18 में भारत ने निर्यात के माध्यम से 70 प्रतिशत आय संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों से प्राप्त की (एमपीईडीए 2019)। हाल ही में अमेरिका ने भारतीय समुद्र से पकड़ी जाने वाली श्रिम्प प्रतिबंध लगा दिया है। इससे भारतीय मछुआरों का लगभग 300 मिलियन अमेरिकी डालर का निर्यात प्रभावित हो सकता है। माइक्रोप्लास्टिक ने पिछले कुछ वर्षों में विभिन्न देशों के नियामक निकायों का ध्यान आकृष्ट किया है। माइक्रोप्लास्टिक शारीरिक विकास, आंतों की क्षति, मानसिक तनाव, सूजन, प्रतिरक्षण प्रणाली पर प्रभाव, हार्मोनल विकृति, असामान्य विकास, कोशिका क्षरण, विषाक्तता और पाचन प्रणाली में खराबी इत्यादि का कारण बन सकता है। कैलीफोर्निया जैसे कुछ न्यायालयों ने माइक्रोप्लास्टिक्स से संबंधित कानून पारित किए हैं। इनके तहत राज्य नियामकों को मानक तैयार करने और उन्हें नियमों में शामिल करने की आवश्यकता बताई गई

है। भारत ने अपने प्रमुख मत्स्य उत्पादों (फिनफिश और शेलफिश) के निर्यात से वर्ष 2017-18 में 6.3 मिलियन अमेरिकी डॉलर (45,106.89 करोड़ रुपये) की आय प्राप्त की। समुद्री खाद्य भारत के कुल निर्यात का 10 प्रतिशत और समग्र कृषि निर्यात का लगभग 20 प्रतिशत है। वैश्विक श्रिम्प व्यापार में लगभग 20-22 प्रतिशत हिस्सेदारी भारत की है। माइक्रोप्लास्टिक्स वैश्विक पर्यावरणीय चिंता का विषय बन चुका है, लिहाजा यह वैश्विक स्तर पर निरंतर जांच के दायरे में है। रासायनिक योजकों को धारण करने के कारण स्वास्थ्य पर माइक्रोप्लास्टिक का घातक असर पड़ता है। इस बात को ध्यान में रखकर कई देश निकट भविष्य में इन हानिकारक रोगजनकों को मछली से जुड़े खाद्य खतरों के रूप में वर्गीकृत कर इन्हें मत्स्य उत्पादों की गुणवत्ता से जुड़े सुरक्षा मानकों में शामिल कर सकते हैं।

संकेंद्रित क्षेत्र



समुद्री वातावरण में माइक्रोप्लास्टिक्स का बायोमैगनीफिकेशन

संदर्भ

- 1 Baztan, J., Jorgensen, B., Pahl, S., Thompson, R.C., & Vanderlinden, J. P. (Eds.). (2016). MICRO 2016: Fate and Impact of Microplastics in Marine Ecosystems: From the Coastline to the Open Sea. Elsevier.
- 2 Jayasiri, H. B., Purushothaman, C. S., & Vennila, A. (2013). Quantitative analysis of plastic debris on recreational beaches in Mumbai, India. Marine pollution bulletin, 77(1-2), 107-112.
- 3 Li, J., Yang, D., Li, L., Jabeen, K., & Shi, H. (2015). Microplastics in commercial bivalves from China. Environmental pollution, 207, 190-195.
- 4 https://mpeda.gov.in/MPEDA/marine_products_exports.php
- 5 Naidu, S. A. (2019). Preliminary study and first evidence of presence of microplastics and colorants in green mussel, *Perna viridis* (Linnaeus, 1758), from southeast coast of India. Marine pollution bulletin, 140, 416-422.
- 6 Van Cauwenberghe, L., & Janssen, C. R. (2014). Microplastics in bivalves cultured for human consumption. Environmental pollution, 193, 65-70.
- 7 An analysis of European plastics production, demand and waste data, <https://www.plasticseurope.org/en/resources/publications/1804-plastics-facts-2019>
- 8 Microplastics in Fisheries and Aquaculture: Status of Knowledge on Their Occurrence and Implications for Aquatic Organisms and Food Safety, <http://www.fao.org/3/a-i7677e.pdf>

एमपीईडीए को सीआईएस एसआईजी ई-गवर्नेंस अवार्ड

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) को 'प्रोजेक्ट्स-सस्टेनेंस' श्रेणी के तहत 'ऑनलाइन प्री-हार्वैस्ट टेस्ट सिस्टम' के लिए 'सीएसआई एसआईजी- ई गवर्नेंस अवार्ड-2019' प्रदान किया गया। यह पुरस्कार इस बात का परिचायक है कि एमपीईडीए ने ई-गवर्नेंस यात्रा और सूचना एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था में योगदान के साथ-साथ हितधारकों को भी लाभ के अवसर प्रदान किए हैं। भारत से निर्यात होने वाले जलीय कृषि उत्पादों में श्रिम्प सबसे प्रमुख है। इसके निर्यात से देश को 2.5 अरब अमेरिकी डॉलर प्राप्त होते हैं। निर्यात के लिए श्रिम्प का उत्पादन करने वाले जलीय कृषि फार्मों का एमपीईडीए और अन्य एजेंसियों में नामांकन

अनिवार्य है। एमपीईडीए के प्रतिनिधि कृषि समूहों के मध्य शृंखलाबद्ध अभियान चलाकर जलीय कृषि फार्मों का विवरण एकत्र करते हैं। इनका एक डिजिटल डेटाबेस तैयार किया जाता है जिसमें संबंधित फार्मों की विशेषताओं सहित तमाम जरूरी जानकारी शामिल रहती है। ऐसे डेटा बेस की शुरुआत दिसंबर 2012 में हुई थी। नामांकन के लिए अनुरोध किए जाने पर प्रत्येक फार्म का भौतिक सत्यापन किया जाता है और जीपीएस उपकरण की मदद से एमपीईडीए के प्रतिनिधि द्वारा हर अपेक्षित जानकारी जुटाई जाती है। नामांकन के लिए प्रस्तुत प्रत्येक आवेदन पर एक पावती संख्या दर्ज की जाती है जिसकी एक प्रति किसान को भी उपलब्ध कराई जाती है। इसे 8 वर्षों की विशिष्ट संख्या



भुवनेश्वर स्थित कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ इंस्ट्रुमेंटल टेक्नोलॉजी में आयोजित पुरस्कार समारोह में ओडिसा के इलेक्ट्रॉनिक्स, आईटी, खेल एवं युवा मामलों के राज्यमंत्री तुषारकांत बेहड़ा के हाथों पुरस्कार ग्रहण करते एमपीईडीए के अधिकारी

से पहचाना जाता है। जीआईएस डेटा को एक परिष्कृत जीआईएस सॉफ्टवेयर (आर्कजीआईएस) में संश्लेषित किया जाता है। यह एक अद्वितीय ऑनलाइन प्रक्रिया है।

नामांकन के लिए एमपीईडीए को 70,000 से अधिक आवेदन प्राप्त हुए हैं जिनमें से 52,500 को भौतिक रूप से सत्यापित किया गया है और 45000 से अधिक का जीआईएस संदर्भ दर्ज किया गया है। एमपीईडीए ने जीआईएस संदर्भित फार्मों के लिए किसानों को नामांकन कार्ड जारी करना शुरू कर दिया। जलीय किसानों को अब तक लगभग 33417 नामांकन कार्ड जारी किए जा चुके हैं। फार्म नामांकन एक सतत प्रक्रिया है और डेटाबेस का एक बहुउद्देशीय आधार है। जीपीएस की मदद से खेतों का सीमा समन्वय किया जाता है और जीआईएस सॉफ्टवेयर (आर्कजीआईएस) का उपयोग करके पॉलीगॉन भी बनाए जाते हैं। अब सभी स्थानिक डेटा bharatmaps.gov.in पर मैप किए जा रहे हैं। 'भारत मैप्स' एक मल्टी-लेयर जीआईएस प्लेटफॉर्म है जो राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस डोमेन में भू-स्थानिक इलेक्ट्रॉनिक्स वितरण प्रणालियों के अंतर्गत है।

आंध्र प्रदेश में एक जिले के डेटा को 'भारत मैप्स' की मैपिंग के लिए एक टीम को सौंपा गया है। टीम डेटा के प्रबंधन के लिए एमपीईडीए को इंटरफेस प्रदान करने पर सहमत हो गई है। गौरतलब है कि यूरोपीय संघ के आयातक देशों/बाजारों में निर्यात किए जाने वाले भारतीय श्रिम्प के साथ सरकार द्वारा प्रदान गारंटी के रूप में पीएचटी प्रमाणपत्र होना चाहिए। फसल प्राप्ति से पूर्व श्रिम्प का नमूना एकत्र किया जाता है और किसी भी प्रतिबंधित एंटीबायोटिक दवा के अवशेषों के लिए इसका परीक्षण किया जाता है। अप्रैल 2009 से मार्च 2013 तक परीक्षण की यह प्रणाली मैनुअल थी लेकिन अब इसे नमूना, नमूना संग्रह, प्रयोगशाला में परीक्षण, उच्च प्रयोगशाला में पुनःपरीक्षण, प्रमाण-पत्र बनाने, इनका मुद्रण, प्रमाण-पत्रों के लिए अनुरोध की पूरी प्रक्रिया,

प्रमाण की पुष्टि के लिए खेत की पहचान और सत्यापन इत्यादि को डेटाबेस पर निर्भर पीएचटी प्रणाली में शामिल किया गया है। ऑनलाइन डेटाबेस 'प्री-हार्वेस्ट टेस्ट सिस्टम' की रीढ़ है। यह खासकर यूरोपीय संघ के लिए जलीय कृषि उत्पादों के निर्यात के मद्देनजर एक अनिवार्यता के रूप में विकसित हुआ है। वर्तमान में देशभर में 11 एलिसा स्क्रीनिंग प्रयोगशालाएं काम कर रही हैं जहां निर्यात के लिए जलीय कृषि उत्पादों में प्रतिबंधित एंटी-बायोटिक अवशेषों की उपस्थिति का परीक्षण किया जाता है।

ऑन-लाइन प्री-हार्वेस्ट सर्टिफिकेट सिस्टम 15 अप्रैल 2013 को शुरू हुआ। पीएचटी सिस्टम की निगरानी, लैब/ रसायन के संचालन और रखरखाव, कार्य मूल्यांकन और उत्पादन-संबंधी रिपोर्ट आदि के लिए एक संपूर्ण सेट तैयार किया जाता है। एप्लिकेशन में अब किसान लॉग इन और डिजिटल हस्ताक्षरित पीएचटी प्रमाणपत्र की अतिरिक्त सुविधा जोड़ी गई है। किसान अपने पंजीकृत मोबाइल में प्राप्त फार्म आईडी और ओटीपी का उपयोग करके सिस्टम में लॉग इन कर सकता है। वह प्री-हार्वेस्ट टेस्ट प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के लिए फसल का विवरण (फसल की अवधि, अनुमानित उत्पादन, प्रजाति, श्रिम्प का आकार आदि) देकर नमूना संग्रह के लिए अनुरोध प्रस्तुत कर सकता है। साथ ही, भुगतान गेटवे का उपयोग करके ऑनलाइन आवश्यक शुल्क का भुगतान भी कर सकता है। नमूना अनुरोध और प्रमाण-पत्र की स्थिति किसान लॉग इन में उपलब्ध है। डिजिटली हस्ताक्षरित पीएचटी सर्टिफिकेट सिस्टम में जेनरेट होता है और किसान सर्टिफिकेट डाउनलोड कर सकता है। निर्यात के उद्देश्य से ईआईसी (निर्यात निरीक्षण परिषद) से स्वास्थ्य प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के लिए निर्यातक पीएचटी प्रमाणपत्र का उपयोग करते हैं। स्वास्थ्य प्रमाण-पत्र जारी करने के लिए ईआईसी प्रणाली में नये आयाम जोड़े जाएंगे।

दिसंबर, 2019 के दौरान भारत के प्रमुख बंदरगाहों पर मछली का आवक संबंधी खास बातें

अफजल वी. वी., एन. जे. नीतू. और जॉयस वी. थॉमस, नेटफिश-एमपीईडीए

भारत के प्रमुख बंदरगाहों से रोजमर्रा पहुंचने वाली मछली की प्रमुख प्रजातियों तथा मछली पकड़ने वाले जहाजों के विवरण का लेखा-जोखा नेटफिश रखता है। ऐसा वह मछली पकड़ने के कार्य हेतु एमपीईडीए की प्रमाणन प्रणाली को सुगम बनाने के लिए करता है।

प्रस्तुत रिपोर्ट में दिसंबर, 2019 के दौरान प्राप्त डेटा का विश्लेषण किया गया है।

डेटा संग्रह और विश्लेषण

मछली पकड़ने और नौकाओं के आगमन के आंकड़े भारत के नौ तटवर्ती राज्यों के चुनिंदा 97 बंदरगाहों पर तैनात डेटा कलेक्टरों द्वारा प्राथमिक और माध्यमिक दोनों स्रोतों से रोजमर्रा के आधार पर जुटाए गए (देखें तालिका-1)। मछली की प्रमुख प्रजातियों की कुल मात्रा जो बंदरगाह पर एक दिन में उतारी जाती है, उसे अनुमान के आधार पर आंका गया। बंदरगाह पर मछली पकड़ने के जहाजों का नाम, पंजीकरण संख्या और आकार-प्रकार संबंधी जानकारी भी दर्ज की गई। प्रजाति-वार, क्षेत्र-वार, राज्य-वार और बंदरगाह-वार अनुमानों पर पहुंचने के लिए ऑनलाइन ऐप और एमएस ऑफिस (एक्सेल) टूल्स का उपयोग करके डेटा का विश्लेषण किया गया।

तालिका - 1

क्रम संख्या	राज्य	बंदरगाह
1	गुजरात	जाफराबाद
2		वेरावल
3		मंगरोल
4		घोघला
5		कोटाडा
6		सूत्रपाडा
7		वानकबरा
8		द्वारका रुपन
9		ढोलई
10		उमरगाम
11		चोरवाड
12		पोरबंदर
13	महाराष्ट्र	अलीबाग कोलीवाड़ा
14		अर्नाला
15		वसई
16		दहानू
17		हर्णे
18		मालवन
19		न्यू फेरी वार्फ
20		ओनी भट्टी दाभोल
21		रत्नागिरी
22		साखरी नाटे
23		ससून डॉक
24		सातपाटी
25		तरमुंबरी देवगड
26		उत्तान
27		वर्सोवा

संकेंद्रित क्षेत्र

28	गोवा	कटबोना
29		मालिम
30		वास्को
31		चपोरा
32	कर्नाटक	अम्दल्ली
33		बेलेकेरी
34		भटकल
35		गंगोली
36		होन्नावर
37		कारवार
38		मालपे
39	ताडरी	
40	केरल	कोयिलान्ध्य
41		चेरुवाथुर
42		मपला बे
43		अजिकाल
44		थंगासेरी
45		वादी
46		नीन्दकारा
47		चेल्लानाम
48		पोन्नानी
49		चेतुवा
50		विपिन
51		मुनाम्बम
52		थोप्पुम्पडी
53		पुथ्थियाप्पा
54		बेपोर
55		कायमकुलम
56		थोत्तापल्ली
57		विजीन्जम
58	सविथिकुलान्गारा	
59	तमिलनाडु	चेन्नई
60		चित्रामुत्तोम
61		कोलाचेल
62		कुड्डालोर
63		कराईकल
64		कोडियाकराई
65		कोत्तैप्पत्तिनाम
66		मल्लिपतनम
67		मंडपम
68		मुदसल ओदी

69	तमिलनाडु	नागपट्टिनम
70		पंबन
71		पज्हायर
72		पांडिचेरी
73		पूम्पुहार
74		पुलिकट
75		रामेश्वरम
76		थारुवैकुलम
77	ठेन्गापत्तानाम	
78	तूतीकोरिन	
79	आंध्र प्रदेश	काकीनाडा
80		मछलीपट्टनम
81		निज़ामपट्टनम
82		पुदिमदाका
83		विशाखापत्तनम
84		वाडरेवु
85	यानम	
86	ओडिशा	बहाबलपुर
87		बलरामगढ़ी
88		बलुगओ
89		धामरा
90	पारादीप	
91	पश्चिम बंगाल	देशप्राण
92		फ्रेजर गंज
93		काकद्वीप
94		नामखाना
95		रैदिघी
96		शंकरपुर
97		सोला

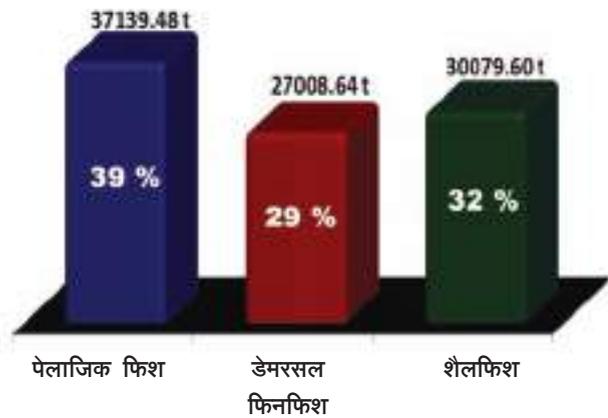


संकेंद्रित क्षेत्र

मछली की अनुमानित लैंडिंग

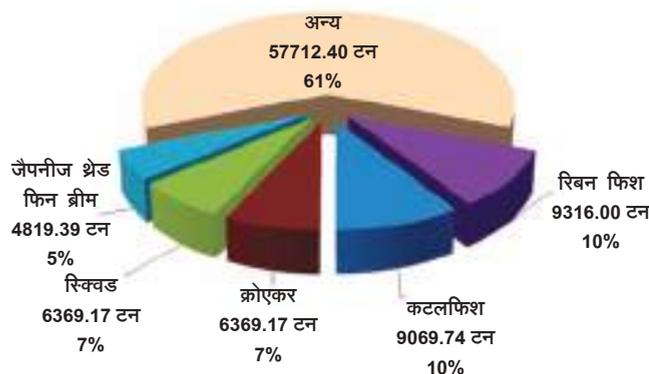
दिसंबर, 2019 के दौरान चुनिंदा लैंडिंग स्थलों से रिकार्ड दर्ज की गई सुमद्री मछली की कुल मात्रा 94227.72 टन थी। इसमें पैलाजिक फिनफिश की मात्रा 7139.48 टन (39%), डेमरसल फिनफिश की मात्रा 27008.64 टन (29%) और शैलफिश के संसाधन 30079.60 टन (32%) थे। (आकृति-1)

शैलफिश की लैंडिंग में 16124.36 टन मोलस्क (स्क्वड, कटलफिश, ऑक्टोप्स) और क्रस्टेशियन्स 13955.24 टन (श्रिम्प, क्रैब्स, लॉबस्टर) हैं।



आकृति - 1. दिसंबर, 2019 में पकड़ी गई मछली का श्रेणी-वार ब्योरा

बंदरगाहों पर मछलियों की 253 प्रजातियों की लैंडिंग हुई। इसमें प्रमुख योगदान रिबन फिश, कटलफिश, क्रोएकर, स्क्वड और जैपनीज थ्रेडफिन ब्रीम (आकृति-2) का था जिनका कुल पकड़ी गई मछली में हिस्सेदारी 39 फीसद थी। समुद्र से पकड़ कर प्रमुख रूप से स्क्वड, टूना, बॉम्बे डक और इंडियन मैकेरल लाई गई और इनमें से हरेक 3000 टन से अधिक पकड़ कर लाई गई।



आकृति-2

तालिका-2 में दिसंबर, 2019 के दौरान पकड़ कर लाई गई मछली की प्रजातियों को दर्शाया गया। पैलाजिक फिनफिश में रिबन फिश, स्क्वड और टूना की प्रमुख रूप से आपूर्ति हुई। हालांकि डेमरसल फिनफिश में मुख्य रूप से क्रोएकर और जैपनीज थ्रेडब्रीम की आपूर्ति हुई। शैलफिश में प्रमुख रूप से कटलफिश, स्क्वड और कोस्टल श्रिम्पस पकड़ कर लाए गए। कोस्टल श्रिम्प में सबसे अधिक योगदान करीकाडी श्रिम्प का था जिसकी आपूर्ति 2946.50 टन दर्ज की गई।

तालिका - 2 दिसंबर, 2019 में पकड़े गए प्रमुख मत्स्य उत्पाद

मत्स्य उत्पाद	टन में मात्रा	पकड़ी गई मात्रा में %
पैलाजिक फिनफिश		
रिबन फिश	9316.00	9.89
स्क्वड	4448.29	4.72
टूना	4189.01	4.45
बॉम्बे डक	3340.61	3.55
इंडियन मैकेरल	3219.13	3.42
एनकरोविज	2899.56	3.08
इंडियन ऑयल सार्डिन	1874.23	1.99
सीरफिश	1405.68	1.49
लेसर सार्डिन	1334.48	1.42
शैड्स	631.93	0.67
स्वोर्ड फिश	521.80	0.55
बारकुडास	510.18	0.54
डॉल्फिन फिश	470.93	0.50
सैलफिश	440.03	0.47
हेरिंग्स	436.06	0.46
ट्रेवलिज	336.91	0.36
लेदर जैकेट	314.21	0.33
इंडियन सेलमन	290.70	0.31
मलेट्स	252.19	0.27
मार्लिन्स	197.43	0.21
कोबिया	184.03	0.20
व्हाइट फिश	181.91	0.19
क्वीन फिश	140.39	0.15
नीडल फिश	59.00	0.06
सिल्वर बिड्डी	52.74	0.06
हॉफब्रेक्स	24.94	0.03

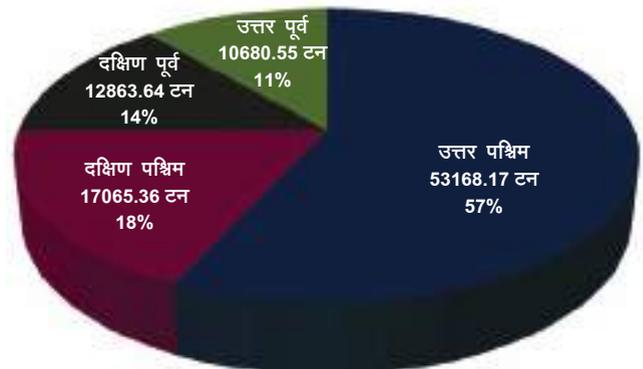
संकेंद्रित क्षेत्र

सिलागो	21.81	0.02
पोम्पेनो	11.73	0.01
मिल्क फिश	11.50	0.01
पलाइंग फिश	8.86	0.01
सीबास	8.63	0.01
इंडियन थ्रेडफिश	2.33	0.00
स्वीट लिप	1.18	0.00
वूहू	0.71	0.00
ड्रिफ्ट फिश	0.40	0.00
कुल	37139.48	39.41
डेमरसल फिनफिश		
क्रोकर्स	6941.02	7.37
जैपनीड थ्रेड फिन ब्रीम	4819.39	5.11
कैटफिश	2750.84	2.92
लिजर्ड फिश	2216.79	2.35
पाम्फ्रेट्स	1950.06	2.07
सोल फिश	1856.23	1.97
मून फिश	891.12	0.95
रीफ कोड्स	853.16	0.91
बुल्स आई	778.50	0.83
शार्क	713.10	0.76
ट्रिगरफिश	660.43	0.70
थ्रेड फिन ब्रीम्स	480.30	0.51
गोट फिश	464.00	0.49
पॉनी फिश	370.96	0.39
ईल	352.52	0.37
रे	311.57	0.33
थ्रेड फिन	145.34	0.15
एम्परर	130.10	0.14
स्नैपर	117.59	0.12
स्पाइनफुट	72.92	0.08
पर्च	48.65	0.05
सीब्रीम	28.94	0.03
प्लैट फिश	26.66	0.03
गुपर्स	12.84	0.01
पैरटफिश	7.90	0.01
रैबिट फिश	5.22	0.01

स्पेड फिश	1.15	0.00
सीकल फिश	1.12	0.00
सर्जन फिश	0.23	0.00
कुल	27008.41	28.66
शेलफिश		
कोस्टल श्रिम्पस	9958.87	10.57
कटलफिश	9069.74	9.63
स्क्वड	6369.17	6.76
सी कॉर्ब	2101.54	2.23
डीप सी श्रिम्प	1822.55	1.93
ऑक्टोपस	680.22	0.72
झींगा	38.47	0.04
मड क्रैब	33.80	0.04
वेलक	5.22	0.01
कुल	30079.60	31.92
कुल योग	94227.72	100.00

पकड़ कर लाई गई मछली का क्षेत्र-वार ब्योरा

सबसे ज्यादा मछली पकड़ कर उत्तर पश्चिम तट पर लाई गई। उत्तर पश्चिम तट पर कुल 53618.17 टन (पकड़ी गई कुल मछली का 57%) महाराष्ट्र व गुजरात के चुनिंदा बंदरगाहों पर आवक दर्ज की गई। दक्षिण पश्चिम तट के तहत केरल, कर्नाटक और गोवा में 17065.36 टन (कुल पकड़ी गई मछली का 18%) दर्ज किया गया। दक्षिण-पूर्वी तट के तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के चुनिंदा बंदरगाहों पर कुल 12863.64 टन (14%) मछली पकड़ कर लाई गई। उत्तर पश्चिम तट पर कुल 10680.55 टन (11%) मछली पकड़ कर लाई गई। उत्तर-पश्चिम तट के तहत पश्चिम बंगाल और ओड़ीशा के चुनिंदा बंदरगाह है। (आकृति. 3).



आकृति -3 दिसंबर, 2019 में पकड़ी गई मछली का (टनों में) क्षेत्रवार ब्योरा

संकेंद्रित क्षेत्र

पकड़ कर लाई गई मछली का राज्य-वर ब्योरा

गुजरात में सबसे अधिक मछलियां पकड़ कर लाई गईं। गुजरात में मछली की आवक 29119.65 टन (कुल पकड़ कर लाई गई मछलियों का 31%) दर्ज की गई (आकृति. 4)। इसके बाद महाराष्ट्र में मछलियां पकड़ कर लाई गईं। महाराष्ट्र में 24498.52 टन (26%) और उसके बाद केरल में 10104.39 टन (11%) मछली पकड़ कर लाई गई। इस अवधि में सबसे कम मछली गोवा में पकड़ कर लाई गई। गोवा में केवल 2865.09 टन (3%) दर्ज की गई।



आकृति -4 दिसंबर, 2019 में मछलियों की (टनों में) राज्य वर आपूर्ति

पकड़ कर लाई गई मछली का बंदरगाह वर ब्योरा

इस महीने में समुद्र से पकड़ कर लाई गई मछली के आंकड़े तालिका -3 में दर्ज हैं। इसके तहत 97 बंदरगाहों में वरावल बंदरगाह में सबसे अधिक मछली की आपूर्ति दर्ज की गई। वरावल बंदरगाह पर 12814.36 टन (14%) दर्ज की गई। इसके बाद न्यू फैरी वार्फ में 12130.84 टन (13%) मछली पकड़ कर लाई गई। सबसे कम मछली पकड़ कर लाने का आंकड़ा केरल के विजिंहजम बंदरगाह पर (18.28 टन) दर्ज किया गया।

तालिका-3. दिसंबर, 2019 में पकड़ी गई मछली का (टनों में) बंदरगाह-वर ब्योरा

राज्य	बंदरगाह	मात्रा (टनों में)
गुजरात	वेरावल	12814.36
	मंगरोल	6863.35
	वनकबरा	2712.05
	पोरबंदर	1976.44
	जाफरबादा	1689.69
	कोटाडा	1436.08
	द्वारका रुपन	634.25

महाराष्ट्र	ढोलई	279.51
	चोरवाडा	234.84
	सूत्रपाडा	194.39
	उमरगाम	146.91
	घोघल	137.79
	न्यू फैरी वार्फ	12130.84
	ससून डॉक	4555.03
	हर्णे	1605.02
	रत्नागिरी	1599.76
	अमाले	1491.32
	सातपाटी	1169.10
	सातपाटी	537.98
	वसई	303.58
	उत्तान	257.54
गोवा	अलीबाबा कोलीवाडा	239.48
	साखरी नाते	204.13
	मालवन	188.14
	दहानू	110.99
	ओनी भट्टी दाभोल	64.13
	तरमुम्बरी देवगड	41.49
	मालिम	1749.77
कर्नाटक	कटबोना	684.96
	वास्को	358.13
	चपोरा	72.24
	मालपे	3143.26
	ताडरी	254.03
	कारवार	200.27
	गंगोली	186.22
	भटकल	178.46
	अमदाली	63.52
	बेलेकरी	36.18
होन्नावर	33.95	

संकेंद्रित क्षेत्र

केरल	थोप्पुम्पडी कोच्चि	2609.19
	मुनाबम	1861.29
	सविथकुलानगारा	967.64
	विपिन	752.77
	नीन्दकारा	688.75
	बेपोर	678.18
	पोन्नानी	388.76
	अजिकाल	334.15
	कयमकुलम	312.14
	चेलानम	308.18
	पुथ्थियप्पा	228.08
	चेरुवथ्युर	205.53
	थोत्तापल्ली	175.13
	कोयीलांडी	140.64
	मोपला बे	134.32
	वादी	111.36
	चेतुवा	101.96
	थंगासेरी	88.07
	विजीन्जम	18.28
	तमिलनाडु	चेन्नई
नागपट्टिनम		2084.16
ठेन्नापत्तानाम		1321.49
कराईकल		1239.85
कोलाचेल		704.16
थारुवैकुलम		411.35
कडलोर		266.07
पज्हायर		179.69
पूम्पुहार		120.00
पुडुचेरी		118.39
मल्लिपत्तनम		87.98
पमबन		77.32
मुदसल ओदी		77.25
रामेश्वरम		73.91
तूतीकोरन		67.56

	चिनामुट्टम	59.70
	मंडपम	55.22
	कोडीकरी	44.15
	कोट्टीपट्टनम	40.22
	पुलिकट	30.64
	आंध्र प्रदेश	विशाखापत्तनम
	करीनाडा	515.27
	निजामपत्तनम	331.48
	वोदरवू	258.32
	मछलीपत्तनम	181.31
	यनम	179.17
	पुदिमदाका	75.96
ओडीशा	पारद्वीप	1653.11
	धमारा	1214.75
	बलरामगढ़ी	859.32
	बहाबलपुर	747.77
	बुलगओ	199.44
पश्चिम बंगाल	नामखाना	1673.99
	देशप्राण	1267.83
	दीघा शंकरपुर	1068.64
	रैदिघी	573.45
	काकद्वीप	572.56
	फ्रैंजर गंज	492.23
	सोला	357.47

नावों के आगमन का अनुमान

दिसंबर, 2019 में कुल 52507 नौकाओं का कुल आगमन हुआ। इसमें वेरावल बंदरगाह पर सबसे ज्यादा नौकाओं का आगमन (338 बार) हुआ। इसके बाद मंगलौर बंदरगाह पर नौकाओं का आगमन 2853 बार हुआ। इसके बाद न्यू फैरी वार्फ में 1780 बार नौकाओं का आगमन हुआ। पमबन बंदरगाह में सबसे कम नौकाओं का आगमन हुआ, इस महीने में पमबन बंदरगाह पर केवल 62 बार नौकाओं का आगमन हुआ। तालिका-4 में नौकाओं के आगमन के हिसाब से शीर्ष 10 बंदरगाहों के नाम हैं।

संकेंद्रित क्षेत्र

तालिका-4. दिसंबर, 2019 में पकड़ी गई मछलियों का (टनों में) बंदरगाह वर ब्योरा

क्रम संख्या	बंदरगाह	नौकाओं का आगमन
1	वेरावल	3738
2	मंगरोल	2853
3	न्यू फेरी वार्फ	1780
4	हर्णे	1464
5	पोरबंदर	1323
6	वनकाबरा	1242
7	उमरगाम	1153
8	माल्पे	1089
9	मुनाबम	1005
10	मालवन	907

सारांश

भारत के प्रमुख बंदरगाहों पर दिसंबर, 2019 में समुद्र से पकड़ कर कुल 94227.72 टन मछली लाई गई और नौकाओं की आगमन संख्या 52507 थी। पकड़ कर लाई गई मछलियों में पेलाजिक फिनफिश की भागीदारी सबसे अधिक थी। मछलियों की प्रजातियों में रिबन फिश सबसे अधिक पकड़ कर लाई गई थी। पश्चिमी तट और उत्तर पश्चिम तट पर कुल पकड़ी गई मछली की तकरीबन 75% मछली पकड़ी गई। राज्यों में गुजरात में इस महीने में सबसे ज्यादा मछली पकड़ कर लाई गई। बंदरगाहों में सबसे अधिक मछली पकड़ कर वेरावल बंदरगाह पर लाई गई और इसी बंदरगाह पर सबसे अधिक नौकाओं का आगमन हुआ।



‘पश्चिम बंगाल में समुद्र से मछली पकड़ने के बेहतर नियामक’ के लिए सलाहकार कार्यशाला

नेटफिश-एमपीईडीए और पश्चिम बंगाल राज्य मत्स्य विभाग ने संयुक्त रूप से ‘पश्चिम बंगाल में समुद्र से मछली पकड़ने के बेहतर नियंत्रण’ पर सलाहकार कार्यशाला आयोजित की। यह कार्यशाला ‘पश्चिम बंगाल में समुद्री मछली पकड़ने के लिए नियंत्रण अधिनियम’ में संशोधन के बारे में सलाह देने के लिए आयोजित की गई थी। यह कार्यशाला कोलकाता स्थित साल्ट लेक में आईसीएआर सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ फिशरीज एजुकेशन में 6 दिसंबर, 2019 को आयोजित की गई थी जिसके लिए वित्तीय मदद एनएफडीबी ने दी थी। इस कार्यशाला में राज्य मत्स्य विभाग, मत्स्य शोध संस्थान, मत्स्य कॉलेज और मत्स्य से संबंधित अन्य संगठनों, एमपीईडीए, नेटफिश, एनजीओ और नौका मालिकों की एसोसिएशन और मछुआरों की एसोसिएशन सहित 68 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया था।

पश्चिम बंगाल में मत्स्य विभाग के अतिरिक्त प्रमुख सचिव डॉ. एस. किशोर ने इस कार्यशाला की अध्यक्षता की। इस अवसर पर पश्चिम बंगाल के मत्स्य विभाग के सचिव आईएएस श्री आर. के. सिन्हा, पश्चिम बंगाल एसईएआई के सचिव श्री परवेज अहमद खान और नेटफिश के मुख्य कार्यकारी डॉ. जॉयस वी. थॉमस इस अवसर पर उपस्थित थे। उपस्थित

लोगों का एमपीईडीए कोलकाता के उपसचिव श्री अर्चिमान लाडिही ने स्वागत किया।

तकनीकी सत्र के दौरान पश्चिम बंगाल यूनिवर्सिटी के पशु और मत्स्य विज्ञान विभाग के प्रमुख व प्रोफेसर डॉ. एन. ए. तलवार ने राष्ट्रीय मत्स्य पालन विधेयक, 2019 (नेशनल मैरीन फिशरीज बिल 2019) पर प्रस्तुति दी। इसके बाद पश्चिम बंगाल सरकार के मत्स्य उपनिदेशक डॉ. सप्तर्षि बिस्वास ने पश्चिम बंगाल में समुद्री मत्स्य नियंत्रण पर प्रस्तुति दी। इसके बाद नेटफिश के मुख्य कार्यकारी डॉ. जॉयस वी. थॉमस ने केरल में समुद्री मछली के विकास पर प्रस्तुति दी। केरल में मत्स्य संसाधनों के संरक्षण के लिए कानून में कई बदलाव किए गए हैं; जैसे मछली पकड़ने वाली नौका की कलर कोडिंग, मछली पकड़ने वाली नौका की आयु तय करना, संचार व नेविगेशन के अलग-अलग कम्यूनिकेशन सिस्टम, जीवनरक्षक उपकरणों को लागू करना, मछली पकड़ने की नौका की लंबाई के आधार पर इंजन की क्षमता निर्धारित करना, अलग अलग फिशिंग गीयर के नियंत्रण व निषेध, स्वचायर मैश ट्रायल कॉड के कार्यान्वयन व प्रभाव, मछली पकड़ने के लिए न्यूनतम कानूनी आकार का निर्धारण, पंजीकरण के अलग - अलग शुल्क ढांचे और मछली पकड़ने

संकेंद्रित क्षेत्र

की नौका के लाइसेंस, नौका के यार्ड बनाने आदि। उन्होंने मत्स्य प्रबंधन काउंसिल के कानूनों के बारे में प्रकाश डाला। प्रस्तुति के बाद साझेदारों से अनुरोध किया गया कि पश्चिम बंगाल एमएफआरए में संशोधन के लिए अपने विचार और सुझाव पेश करें।

इस कार्यशाला में हिस्सा लेने वाले साझेदारों में कोलकाता स्थित सीफूड एक्सपोर्ट्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के सचिव श्री परवेज अहमद खान, डब्ल्यूबीयूएफए के अध्यक्ष श्री प्रणब कार, दीघा मछुआरे व मछली बेचने वालों की एसोसिएशन के चेयरमैन श्री जाय कृष्ण हलधर, डब्ल्यूईयूएफए के सचिव श्री बिभास कोले, फेजरगंज के मछुआरों की एसोसिएशन के सचिव श्री नारायण दास, अक्षय नगर फिशरमैन एसोसिएशन के सहायक सचिव श्री नारायण दास, कोलकाता स्थित सीआईएफई के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. बी. के मोहापात्रा, डेश



कार्यशाला का दृश्य।



कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए पश्चिम बंगाल सरकार के अतिरिक्त प्रमुख सचिव, आईएएस, श्री एस. किशोर। साथ हैं, पश्चिम बंगाल के मत्स्य विभाग के सचिव, आईएएस, श्री आर.के. सिन्हा और पश्चिम बंगाल क्षेत्र के एसईएआई के सचिव श्री मोहम्मद परवेज खान।

मील फिशरमैन एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री गोपाल प्रमाणिक, एमपीईडीए-नेटफिश की ईसी के सदस्य श्री तरुण कुमार गिरी, दक्षिण बंग मत्स्य शुखा खुठी समाबाई समिति लिमिटेड के सचिव श्री लक्ष्मी नारायण जैना, काकद्वीप मछुआरा एसोसिएशन के सचिव श्री प्रियभ्राता मैती, काकद्वीप स्थित सामुद्रिक मत्स्यजीवी श्रमिक यूनियन के सचिव श्री सतीनाथ पात्रा और अन्य उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम के लिए इंतजाम एमपीईडीए के उपनिदेशक श्री ए. लाहिरी और एमपीईडीए नेटफिश के समन्वयक श्री अतनु राय ने किया। इस कार्यशाला का समापन एमपीईडीए के सहायक निदेशक श्री जॉनसन डीसूजा के धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ।



कार्यशाला के दौरान बातचीत करते लोग।

समुद्री खाद्य के निर्यात व प्रक्रियाओं पर एमपीईडीए का जागरूकता कार्यक्रम



उपस्थित लोगों को संबोधित करती संघशासित अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह की सचिव, आईएएस (मत्स्य) श्रीमती नितिका पंवार।

‘अंडमान और निकोबार द्वीप समूहों से समुद्री खाद्य पदार्थ के निर्यात की प्रक्रियाओं’ विषय पर एमपीईडीए ने 3 जनवरी, 2020 को मछली के कारोबारियों और निर्यातकों के लिए एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। सहकारी समितियों के पंजीयक के संगोष्ठी कक्ष में आयोजित इस कार्यक्रम में इन द्वीप समूहों के 35 मछली निर्यातकों व कारोबारियों ने हिस्सा लिया। मत्स्य विभाग के निदेशक श्री उत्पल कुमार सर ने उपस्थित लोगों का स्वागत

किया और अंडमान व निकोबार द्वीपसमूहों में एमपीईडीए का कार्यालय आयोजन व ईआईए डेस्क खोलने के बारे में जानकारी दी। उन्होंने उपस्थित लोगों से अनुरोध किया कि वे इन द्वीपों में प्रसंस्करण और निर्यात के आधारभूत ढांचे के विकास के लिए डेस्क कार्यालय का इस्तेमाल करें।

एमपीईडीए के उपनिदेशक श्री अर्चिमान लाहिड़ी ने समुद्री उत्पादों के निर्यात, विस्तार, मार्केटिंग और भारतीय मत्स्य उत्पादों के निर्यातों की वर्तमान स्थिति पर विस्तार से प्रस्तुति दी। उपस्थित लोगों ने सीधे निर्यात करने के लिए कस्टम क्लियरेंस, अलग-अलग देशों के गुणवत्ता मानदंडों, एमपीईडीए की कल्याणकारी योजनाओं आदि के बारे में जानकारी मांगी। इस कार्यक्रम का समापन श्रीमती नितिका पंवार, आईएएस, सचिव (मत्स्य) के संबोधन के साथ हुआ। उन्होंने आश्वासन दिया कि प्रशासन अंडमान और निकोबार के मछली कारोबारियों और निर्यातकों को हर संभव मदद देगा। उन्होंने लोगों से कहा कि इस द्वीप के रहने वाले लोगों को एमपीईडीए और ईआईए डेस्क ऑफिस की गतिविधियों का पूरा इस्तेमाल करना चाहिए ताकि द्वीप की अर्थव्यवस्था बेहतर हो। उन्होंने उपस्थित लोगों को बताया कि मत्स्य निर्यात क्षेत्र को बेहतर करने के लिए एमपीईडीए और ईआईसी के विशेषज्ञों की नियमित रूप से कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी।



निर्यात की प्रक्रियाओं के बारे में बातचीत करते एमपीईडीए के उपनिदेशक श्री अर्चिमान लाहिड़ी।

थाइलैंड में “खाद्य सुरक्षा जोखिम विश्लेषण” के बीटीएसएफ प्रशिक्षण में हिस्सा लेते एमपीईडीए के प्रतिभागी



हिस्सा लेते भारतीय प्रतिभागी (बाएं से) वाणिज्य विभाग के श्री पुष्पेन्द्र कुमार शर्मा, एपीडा के श्री प्रशांत वाघमारे, एफएसएसएआई के श्री शैलेन्द्र कुमार, ईआईसी श्री वासी असगर, एमपीईडीए के श्री वासिया किशोरकुमार और एनएबीएल के डॉ. पंकज गोयल।

बैकक में 16 से 19 दिसंबर, 2019 को खाद्य सुरक्षा जोखिम विश्लेषण (फूड सेफ्टी रिस्क एनालिसिस) पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें एमपीईडीए के पोर्बंदर उपक्षेत्रीय डिवीजन के तकनीकी अधिकारी वानिया किशोरकुमार ने हिस्सा लिया। उन्हें वाणिज्य मंत्रालय और सक्षम प्राधिकार द्वारा नियुक्त किया गया था। यूरोपीय आयोग ने कंज्यूमर, हेल्थ एंड फूड एक्जीक्यूटिव एजेंसी (सीएचएफईए) को शक्तियां प्रदत्त की थीं और सीएचएफईए ने खाद्य सुरक्षा जोखिम विश्लेषण के सिद्धांतों व तरीकों पर प्रशिक्षण के लिए

आमंत्रित किया ताकि सुरक्षित खाद्य के बेहतर प्रशिक्षण (बेटर ट्रेनिंग फॉर सेफ्टी फूड) के लिए पहल की जा सके।

प्रशिक्षण में 40 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इसमें विभिन्न देशों के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इसमें छह भारतीय प्रतिभागियों ने भी हिस्सा लिया। प्रस्तुतीकरण में विषय जैसे यूरोपीयन यूनियन के सामान्य खाद्य कानून, जोखिम विश्लेषण के तीन आधार स्तम्भ, पौधे की सेहत, अधिकृत उत्पाद, कीटनाशक व पशु चिकित्सा की दवाई, उत्पादों के अवशेष,

संकेंद्रित क्षेत्र

खाद्य के संपर्क में आने वाली सामग्री, रासायनिक रूप से दूषित पदार्थ, जोनोसिस व पशु कल्याण और यूरोपियन ऑफिशियल कंट्रोल आदि थे। इन विषयों पर यूरोप के सदस्य देशों के विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया। हरेक सत्र के बाद

मोबाइल ऐप 'कहूत' के जरिए ऑनलाइन क्विज आयोजित की गई। समापन सत्र में भारत में रणनीतियों के प्रसार पर प्रस्तुति दी गई। प्रशिक्षण सफलतापूर्वक करने पर प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र भी वितरित किया गया।



वर्कशॉप में ट्यूटर के साथ प्रतिभागीगण।



समापन सत्र के दौरान भारत में प्रसार की रणनीतियों पर प्रस्तुति।



प्रशिक्षण के दौरान कक्षा का नजारा।



करीनाडा की आंबेडकर जलीय किसान कल्याण समिति के सपनों को सकार करने में मदद की एनएसीएसए ने

एमपीईडीए के चेयरमैन श्री के.एस. श्रीनिवास और एनएसीएसए के अध्यक्ष ने पूर्वी गोदावरी जिले के करीनाडा के गडीमोगा पंचायत के गांव लक्ष्मीपट्टीपुरम के वोडानाली बैकिश वॉटर क्रीक पर पुल बनाने की आधारशिला 25 जनवरी, 2020 को रखी। इस अवसर पर जलीय कृषि कल्याणकारी सोसायटी (एएफडब्ल्यू) के 300 किसान और आंध्र प्रदेश के कई विभागों के अधिकारीगण उपस्थित थे। इस अवसर पर अमलापुरम संसदीय क्षेत्र की

सांसद श्रीमती चिंता अनुराधा, मुमीदीवरम विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री पुन्नाडा वेंकट सतीश कुमार, जिलाधिकारी व आइएएस श्री डी. मुरलीधर रेड्डी और पूर्वी गोदावरी जिले के कलेक्टर उपस्थित थे। इस मौके पर राज्य मत्स्य विभाग और एमपीईडीए के विजयवाड़ा क्षेत्रीय डिवीजन के संयुक्त सचिव (जलीय कृषि) श्री वाई. विजय कुमार, एमपीईडीए के भीमावरम उपक्षेत्रीय डिवीजन के उपनिदेशक श्री हाकिम भी मौजूद थे।



पूर्वी गोदावरी जिले के करीनाडा के गडीमोगा पंचायत के गांव लक्ष्मीपट्टीपुरम के वोडानाली बैकिश वॉटर क्रीक पर पुल बनाने की आधारशिला रखते एमपीईडीए के चेयरमैन श्री. के. एस. श्रीनिवास और एनएसीएसए के अध्यक्ष। इस अवसर पर अमलापुरम संसदीय क्षेत्र की सांसद श्रीमती चिंता अनुराधा; मुमीदीवरम विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री पुन्नाडा वेंकट सतीश कुमार; डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट व कलेक्टर, आइएएस श्री डी. मुरलीधर रेड्डी और एनएसीएसए के सीईओ श्री के. षड्मुख राव उपस्थित थे।

जलकृषि परिदृश्य



उपस्थित लोगों को संबोधित करते एमपीईडीए के चेयरमैन और एनएसीएसए के अध्यक्ष।

इस अवसर पर श्रीमती चिंता अनुराधा ने मछली पालन करने वाले किसानों की समस्याओं को उजागर किया और बैकिश वॉटर के आरपार पुल बनाने के लिए धन आवंटित करने के लिए एमपीईडीए का धन्यवाद दिया। उन्होंने इस प्रस्ताव को आगे बढ़ाने के लिए एनएसीएसए के सीईओ का धन्यवाद दिया।

श्री पुन्नाडा वेंकट सतीश कुमार ने एनएसीएसए की तारीफ की कि उसने किसानों की मांगों पर ध्यान दिया, इस विषय को सामाजिक उत्तरदायित्व कोष के तहत धन एकत्रित करने के लिए एमपीईडीए के समक्ष उठाया। उन्होंने कहा कि इस परियोजना से जलीय कृषि करने वाले कमजोर तबके के किसानों को आजीविका जुटाने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि अगर केंद्र और राज्य सरकार संयुक्त रूप से भंडारण इकाइयां स्थापित करे और प्रशिक्षण मुहैया करवाए तो बिचौलियों को हटाया जा सकता है। आईएसए श्री डी. मुरलीधर ने कहा कि एनएसीएसए के सीईओ से शुरुआती चर्चा कर इस अभियान के लिए जमीनी स्तर पर सर्वेक्षण किया गया। इसके बाद सामाजिक उत्तरदायित्व कोष से 6,25,000 करोड़ रुपए स्वीकृत किए गए। उन्होंने कहा कि इस तरह के आर्थिक अनुदान मुहैया होने से किसानों की जीवन स्तर सुधरेगा।

आईएसए श्री के.एस. श्रीनिवास ने किसानों को संबोधित करते हुए बताया कि कैसे एनएसीएसए ने कलस्टर बेस्ड एप्रोच के जरिए लघु और सीमांत किसानों को गुणवत्तापूर्वक टिकाऊ मत्स्य उत्पाद के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने बताया कि एनएसीएसए ने सात तटीय राज्यों में 941 सक्रिय सोसायटी आयोजित कीं और जलीय कृषि किसानों को तकनीकी व वित्तीय मदद मुहैया करवाई। उन्होंने इस पर प्रसन्नता व्यक्त की कि आर्थिक रूप से कमजोर किसानों के लिए एनएसीएसए की वित्तीय योजनाओं के अलावा सामान्य ढांचे के विकास के



कार्यक्रम के अवसर पर उपस्थित लोग।

लिए और कोष मुहैया करवाया जाएगा। उन्होंने एनएसीएसए को निर्देश दिया कि इस पुल का निर्माण निर्धारित तीन महीने की अवधि में हो जाए। इसके बाद चेयरमैन ने सोसायटी के किसानों को स्थायी पंजीकरण प्रमाणपत्र दिया।

इस अवसर पर एनएसीएसए के सीईओ श्री के. षड्मुख राव ने कहा कि मत्स्य पालन करने वाले किसानों को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने देश में जलीयकृषि क्षेत्र के महत्व पर प्रकाश डाला और इसके विकास में किसानों की भूमिका के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि एनएसीएसए का मिशन यह है कि जलीय कृषि करने वाले किसानों को गुणवत्तापूर्ण और सुरक्षित मत्स्य उत्पादों तैयार करने के लिए टिकाऊ व पर्यावरण अनुकूल खेती की तकनीकें अपनाने के लिए प्रेरित किया जाए। उन्होंने इस प्रोजेक्ट को स्वीकृत करने के लिए एमपीईडीए के चेयरमैन का धन्यवाद दिया। साथ ही उन्होंने वित्तीय सहायता मुहैया करवाने के लिए डिस्ट्रीक्ट कलेक्टर का भी धन्यवाद दिया।

पर्यावरण अनुकूल और टिकाऊ श्रिम्प पालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम



साचिन में प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करते एमपीईडीए के उपनिदेशक श्री मारुति डी. यालिगर। पास में बैठे हुए हैं, सहायक निदेशक श्री श्री उपन के. पांडेय।

सूरत के साचिन में एमपीईडीए के वलसाड क्षेत्रीय डिवीजन ने 6 से 10 जनवरी, 2020 तक पर्यावरण

अनुकूल और टिकाऊ श्रिम्प पालन पर पांच दिवसीय पर्यावरण कार्यक्रम आयोजित किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का ध्येय सूरत जिले के तटीय गांवों में श्रिम्प पालन को प्रोत्साहित करना था। इस कार्यक्रम में 82 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए एमपीईडीए के उपनिदेशक श्री मारुति डी. यालिगर ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्य और श्रिम्प पालन में एमपीईडीए के विकास के बारे में बताया।

उद्घाटन सत्र के बाद एमपीईडीए के अधिकारियों ने श्रिम्प पालन पर कई तकनीकी सत्रों पर कक्षाएं आयोजित कीं। श्री मारुति डी. यालिगर, एमपीईडीए के सहायक निदेशक श्री उपन के. पांडेय ने 'श्रिम्प पालन के परिचय, पर्यावरण अनुकूल व टिकाऊ श्रिम्प पालन और तालाब को तैयार करने में एमपीईडीए की भूमिका' पर व्याख्यान दिया।

अगले दिन श्री भवीन ने बीज चयन, पैकेजिंग, यातायात, बीजों व मछलियों को पर्यावरण अनुकूल व स्टार्किंग करना, पानी की गुणवत्ता का प्रबंधन, आनसाइट सलेक्शन और तालाब को बनाना। प्रशिक्षण कार्यक्रम के तीसरे दिन श्री उपन के. पांडेय ने भूमि को पट्टे पर देने की नीति व कलेक्टर को आवेदन देने की प्रक्रिया/ श्रिम्प पालन के लिए सरकारी जमीन का आवंटन, प्रोबायोटिक का इस्तेमाल और मत्स्य पालन में एंटीबायोटिक के दुरुपयोग, छोटी मछलियों को पालने और उनके बड़े होने के बाद प्रबंधन, विपणन और जलीय कृषि में एचएससीसीपी पर

प्रकाश डाला।

अगले दिन प्रशिक्षणार्थियों को सूरत जिले के गबीनी गांव में श्री नीरज भाई के श्रिम्प पालन केंद्र का दौरा कराया गया। प्रशिक्षणार्थियों को श्रिम्प पालन केंद्र के दौरे में तालाब तैयार करने, प्रबंधन, जैव सुरक्षा प्रबंधों, गुड मैनेजमेंट प्रैक्टिसिस (जीएमपीएस) और पानी की गुणवत्ता के विभिन्न उपकरणों के बारे में बताया गया। फार्म के मालिक श्री नीरजभाई ने वत्रामेई श्रिम्प पालन पर अपने अनुभवों का साझा किया। कार्यक्रम के अंतिम दिन श्री मारुति डी. यालिगर और श्री भाविन ने रोग के रोकथाम व नियंत्रण, जलीयकृषि प्राधिकरण के दिशानिर्देशों, लाइसेंस की आवेदन प्रक्रिया, पी. वत्रामेई पालन और जैवसुरक्षा के तरीकों पर सत्रों का संचालन किया। श्री मारुति डी यालिगर ने समापन भाषण दिया और प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए।



साचिन में प्रशिक्षण कार्यक्रम का नजारा।



टिकाऊ श्रिम्प पालन और जलीय कृषि विविधीकरण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

एमपीईडीए के रत्नागिरी उपक्षेत्रीय डिवीजन ने सतारा जिले के जखीनावाड़ी गांव में 10 से 12 जनवरी, 2020 को पर्यावरण अनुकूल व टिकाऊ श्रिम्प पालन और जलीय कृषि की विविधीकृत प्रजातियों पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

सतारा जिले के जखीनावाड़ी गांव को प्रकृति ने ताजे पानी के स्रोत का वरदान दिया है और कम लवणीय भूमि है जो खेती के लिए अनुपयुक्त है। लिहाजा यहां ताजे पानी की मछलियों जैसे तिलपिया और ताजे पानी के झिंगा जैसे स्कैम्पी के पालन की बहुत संभावनाएं हैं। इस क्षेत्र के किसान कम मुनाफा देने वाली मछलियों जैसे इंडियन मेजर क्राप आदि का पालन कर रहे हैं। इस कार्यक्रम का आयोजन इन सभी मुद्दों को ध्यान में रखकर किया गया है।

स्थानीय प्रगतिशील किसान जैसे रत्नादीप शिंदे और श्री संदीप काले ने कार्यक्रम आयोजित करवाने में मदद की। इस कार्यक्रम का ध्येय स्थानीय मछुआरों के साथ-साथ नए उद्यमियों को मछली पालन करने की तकनीक बेहतर करना सिखाना है और उनके मुनाफे को बढ़ाना है। इस कार्यक्रम में 27 लाभार्थियों ने हिस्सा लिया।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन पुणे के नीरा इलाके के प्रगतिशील तिलपिया किसान श्री पंडित चव्हाण ने किया। एमपीईडीए के उपनिदेशक डॉ. टी. आर. जिबिनकुमार ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण और श्रिम्प/झिंगा पालन के विकास में एमपीईडीए योगदान के बारे में संक्षेप में जानकारी दी।

एमपीईडीए के अधिकारियों डॉ. टी. आर. जिबिनकुमार (उपनिदेशक) और डॉ. विष्णुदास गुनागा, कनिष्ठ तकनीकी



उद्घाटन सत्र में अपने विचार व्यक्त करते एमपीईडीए के उपनिदेशक डॉ. टी. आर. जिबिनकुमार।

जलकृषि परिदृश्य



प्रतिभागियों के साथ एमपीईडीए के अधिकारीगण।

अधिकारी ने तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान कई विषयों पर विस्तार से चर्चा की।

कार्यक्रम के पहले दिन श्री पंडित चव्हाण ने 'गिफ्ट तिलपिया के पालन' पर व्याख्यान दिया। कार्यक्रम के दूसरे दिन सतारा के मैसर्स गोल्डन फार्म्स ने 'बायोप्लाक तकनीक से तिलपिया पालन' पर कक्षाएं लीं।

प्रशिक्षण के तीसरे व अंतिम दिन सिंधुदुर्ग के आलंकारिक मत्स्य उद्यमी श्री मिलिंद सारंग ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में 'सजावटी आलंकारिक मत्स्य के प्रजनन' पर कक्षा ली। कोह्लापूर स्थित अकीवत में मीठे पानी की मछली पालने वाले श्री अरुण अलसे ने कम लवणीय भूमि में वन्यामी पालन के अपने अनुभवों को साझा किया। वन्यामी पालन में अभिनव प्रयोग करने वाले श्री विपुल पटेल ने 'बायोप्लॉक सिस्टम से वन्यामेई पालन' पर प्रकाश डाला। हालांकि ग्रो बेस्ट फीड्स की डीलर सुश्री शारदा अंगोलकर ने 'मीठे पानी में मछली पालन के दौरान पानी की गुणवत्ता' पर सत्र का संचालन किया। तीसरे दिन के अंतिम सत्र में सतारा में मत्स्य विभाग के सहायक आयुक्त श्री आनंद राव सालुंके ने "जलीय कृषि

के किसानों के लिए राज्य मत्स्य विभाग की योजनाओं" पर व्याख्यान दिया।

कार्यक्रम का समापन धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ। सतारा के मत्स्य विभाग के श्री आनंद राव सालुंके ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र वितरित किए।



प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र देते एमपीईडीए के अधिकारियों के साथ सतारा के मत्स्य विभाग के सहायक आयुक्त श्री आनंद राव सालुंके।

पश्चिम बंगाल में पर्यावरण अनुकूल व टिकाऊ जलीय कृषि पर प्रशिक्षण कार्यक्रम



मछली पालन स्थल का दौरा करते प्रशिक्षणार्थी।

एमपीईडीए के कोलकाता क्षेत्रीय डिवीजन ने पश्चिम बंगाल के विभिन्न क्षेत्रों में 'पर्यावरण अनुकूल और टिकाऊ जलीय कृषि' पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

पहला प्रशिक्षण कार्यक्रम उत्तरी 24 परगना जिले के हुसैनाबाद के राघवपुर में 9 से 13 दिसंबर तक अनुसूचित जाति व जनजाति के अभ्यर्थियों के लिए आयोजित किया गया। इसमें 20 किसानों ने हिस्सा लिया। इसका ध्येय किसानों को विविधीकरण के विशेष संदर्भ में पर्यावरण अनुकूल और टिकाऊ जलीयकृषि के बारे में शिक्षित करना था। इस कार्यक्रम का उद्घाटन माखलगाचा ग्राम पंचायत के सरपंच श्री तपस बार ने किया। 24 उत्तरी परगना की जिला वन अधिकारी श्रीमती सुलोचना सरकार, सहायक निदेशक श्री जॉनसन डीसूजा और कोलकाता क्षेत्रीय डिवीजन की फिल्ड पर्यवेक्षक ट्रेनी श्री अंशुमान मन्ना ने अपने विचार व्यक्त किए।



उद्घाटन समारोह का नजारा।

जलकृषि परिदृश्य



प्रशिक्षण सत्र का दृश्य।

पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान कई विषयों पर चर्चा की। इन पर चर्चा कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ. वाई. बांगरम्मा, सहायक निदेशक श्री जानसन डीसूजा, एमपीईडीए कोलकाता के फिल्ड सुपरवाइजर ट्रेनी श्री अंशुमान मात्रा, एनएसीएसए के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री प्रदीप मैती, और उत्तरी 24 परगना के एएफओ श्री पिंनकी बोस ने विभिन्न विषयों पर कक्षाओं का संचालन किया। एमपीईडीए के सहायक निदेशक श्री जानसन डीसूजा ने समापन कार्यक्रम के दौरान प्रमाणपत्र, पारितोषिक और भत्ते वितरित किए।

एमपीईडीए के कोलकाता क्षेत्रीय डिवीजन ने 16 से 20 दिसंबर तक पर्यावरण अनुकूल और टिकाऊ जलीय कृषि पर अनुसूचित जाति और जनजाति के अभ्यर्थियों के लिए पूरबा मिदनापुर जिले के गंगराचर और नंदीग्राम-1 में दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। इन दो प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए 45 अभ्यर्थियों ने पंजीकरण करवाया।

एमपीईडीए के कोलकाता क्षेत्रीय डिवीजन के कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ. वाई. बांगरम्मा ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम में डॉ. वाई. बांगरम्मा के अलावा एनएसीएसए के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री आर. करीम, कोन्तेई के फील्ड एक्सटेंशन अधिकारी श्री प्रशांथा मन्ना, पूरबा मेदिनीपुर जिले के कोन्तेई के मत्स्य विभाग के सहायक निदेशक श्री

असीम कुमार महंता ने विभिन्न सत्रों का संचालन किया।

प्रशिक्षणार्थियों ने 19 दिसंबर, 2019 को व्यावहारिक जानकारी के लिए श्री परेश गोपाल के वन्रामेई थ्रिम्प पालन केंद्र का दौरा किया। दादरखार के सौदिकली जलपाई पंचायत की सरपंच श्रीमती गीता रानी मंडल ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र व वजीफा दिया।



प्रमाणपत्र वितरित करते एमपीईडीए के सहायक निदेशक श्री जानसन डी सूजा।



चिरस्थाई जलीयकृषि की बेहतर प्रबंधन तकनीकों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम



प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करते गुड्डुर के मत्स्य सहायक निदेशक श्री एस. के. चंद बाशा।

एमपीईडीए के सेटलाइट सेंटर नेल्लोर ने पुतचलपल्ली और कोटा मंडल में 16 से 18 दिसंबर, 2019 को चिरस्थाई जलीय कृषि पर बेहतर प्रबंधन की तकनीकों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें 15 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

नेल्लोर जिले के गुंडुर मंडल के सहायक निदेशक मत्स्य श्री एस. के. चंद बाशा ने 16 दिसंबर, 2019 को प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। सहायक निदेशक डॉ. गणेश के. ने अपने संबोधन के दौरान कहा कि एमपीईडीए किसी भी तरह के निर्यात को अस्वीकार्य से बचने के लिए कड़े कदम उठा रहा है, किसानों को एकजुट होना चाहिए और भविष्य में ऐसी घटनाओं से बचने के लिए मेहनत करनी चाहिए। उद्घाटन सत्र के बाद तकनीकी सत्र

और विस्तृत तकनीकी सत्र आयोजित हुए। इसमें श्रिम्प पालन, सीबास, क्रैब, कोबिया और पोम्पनो के विशेष संदर्भ में जलीय कृषि के विविधीकरण पर प्रकाश डाला। इसके अलावा अगले तीन दिनों में सक्रिय रोग प्रबंधन, निगरानी कार्यक्रम, एसआईएमपी और व्यापार बाधाओं पर चर्चा की गई।

तकनीकी सत्रों का संचालन डॉ. गणेश के., फिल्ड तकनीकी अधिकारी श्री वाई. साई महर्षि और एनएसीएसए के फिल्ड मैनेजर श्री पी. रविंद्र बाबू ने किया। जलीय कृषि पर एमपीईडीए की प्रमाणन योजनाओं और सोसायटी के गठन व जरूरत पर विशेष सत्रों का आयोजन हुआ।

एनएसीएसए के क्षेत्रीय समन्वयक श्री जे. वेंकटरमण ने

जलकृषि परिदृश्य

किसानों से चर्चा की। इसमें किसानों ने श्रिम्प पालन से दामों में उतार-चढ़ाव, बीमारी के फैलने आदि पर चर्चा की जुड़े विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। इसमें खासतौर से श्रिम्प के गई।



प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफलतापूर्वक करने वाले प्रतिभागी।



Subscription Order / Renewal Form

Please enroll me / us as a subscriber / renew my existing subscription of the MPEDA Newsletter. The subscription fee of Rs. 1000/- inclusive of GST for one year is enclosed vide local cheque/DD No..... dt..... drawn in favour of The Secretary, MPEDA, payable at Kochi. Please send the journal to the following address:

Tel No..... Fax :
E mail

For details, contact:
The Editor, MPEDA Newsletter, MPEDA House, Panampilly Nagar, Kochi - 682 036.
Tel: 2311979, 2321722, Fax: 91-484-2312812. Email : newsletter@mpeda.gov.in

There's no
seafood as

Irresistible

as **Indian** Seafood

From the sparkling Indian seas comes the
best seafood in the world. Enjoy it in
abundance throughout the year.

You haven't tasted the best seafood
if you haven't tasted Indian seafood.



The Marine Products Export Development Authority

Ministry of Commerce & Industry, Government of India

MPEEDA House, Palarupilly Avenue, Kochi - 682 036, Kerala, India

Phone: +91 484 2311979 Fax: +91 484 2313361 E-mail: hdg@mpeeda.gov.in

पर्यावरण अनुकूल व चिरस्थाई जलकृषि पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

एमपीईडीए के कारवार उपक्षेत्रीय डिवीजन ने इस साल एक्सटेंशन कार्यक्रम के तहत 12 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। इसके तहत बीदर जिले के बसवकल्याण की पंचायत के हॉल में 9 से 11 दिसंबर, 2019 तक 'पर्यावरण अनुकूल टिकाऊ जलीय कृषि और विविधीकरण' पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में 30 प्रगतिशील किसानों और नव उद्यमियों ने हिस्सा लिया।

डिवीजन के अनुरोध पर इन अभ्यर्थियों का चयन बसलकल्याण के मत्स्य सहायक निदेशक ग्रेड-II के श्री गौथम ने किया था। इस कार्यक्रम के अंतर्गत कक्षाएं आयोजित की गईं और मछली मेजर क्राप के निजी मत्स्य पालन केंद्र का दौरा करवाया गया। बसवकल्याण के सहायक निदेशक श्री गौथम, एमपीईडीए के कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी श्री जी. रामर, एमपीईडीए के कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी श्री एस. एम. शिरोडकर और बसवकल्याण के मत्स्य विभाग के तकनीकी सहायक श्री दशरथ जाधव ने इन कक्षाओं का संचालन किया।

कर्नाटक सरकार के तहत कृषि विभाग ने 'कृषि होंडा' की स्थापना के लिए आर्थिक मदद दी ताकि मीठे जल के तालाब में मछली पालन और उसके जल से सिंचाई की जा सके। ज्यादातर इन जलाशयों का इस्तेमाल मछली मेजर क्राप की किस्मों के भंडारण के लिए की जाती है जैसे कतला, रोहू, मृगल, ग्रास क्राप, सिल्वर क्राप आदि। इन तालाबों या जलाशयों का इस्तेमाल निर्यातोन्मुख प्रजातियों के भंडारण के लिए भी किया जाता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम को मुख्यतौर पर निर्यातोन्मुख प्रजातियों जैसे मीठे पानी में पी. वन्नामेई, पंगेसियस, तिलपिया, सीबास और स्कैम्पी पर केंद्रित किया जाता है।

बीदर जिले में सिंचाई के लिए छोटे-छोटे तालाब स्थापित किए गए हैं। पंचायत के जलाशयों में स्कैम्प पालन किया जाता है। इन जलाशयों के नाम चुलकी नाला और मुलमुरी हैं जहां हैचरी से तैयार किए गए बीजों का भंडारण किया जाता है।

इन बीजों को स्थानीय मछुआरों की सोसायटी को दिया जाता है। इन तालाबों में हर साल 5-7 मीट्रिक टन स्कैम्पी को तैयार किया जाता है और उसे स्थानीय बाजार में बेचा जाता है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान अभ्यर्थियों से निर्यातोन्मुख प्रजातियों के जीवविज्ञान के विषयों पर चर्चा की गई जैसे पेनाइड थ्रिम्प, सीबास, गिप्ट, तिलपिया, स्कैम्पी, पंगेसियस और अन्य मेजर क्राप्स। इसके अलावा जगह का चयन, तालाब की खुदाई, तालाब को मछली पालन के लिए तैयार करना व पानी में चूना पत्थर व अन्य प्रोबॉयोटिक्स मिलाना, हैचरी में बीज के चयन का तरीका, यातायात के दौरान व मत्स्य पालन केंद्र में बीज को अनुकूलन स्थिति में लाना, पानी की गुणवत्ता का प्रबंधन, उचित बीजों का चयन और उसका प्रबंधन, मत्स्य पालन केंद्र की जैव सुरक्षा व मछलियों की शिकारियों से रक्षा, मछली की प्रजातियों की स्वास्थ्य रक्षा, जलीय कृषि में प्रतिबंधित एंटीबायोटिक्स और मछली के प्रजनन व पैकिंग की तकनीकों जैसे विषयों पर चर्चा की गई।

तीसरे दिन प्रतिभागियों ने बसवकल्याण तालुक के लाडवंती गांव में श्री अन्नाराव केशराव के मत्स्य पालन केंद्र का दौरा किया। उन्होंने पीपी लाइन के तालाब का निर्माण किया था और फरवरी, 2019 में मेजर क्राप की 25000 फ्राई का भंडारण किया था। वह अभी तक 400 किलोग्राम मछली की पैदावार प्राप्त कर चुके हैं। मछली पालन के इस स्थल पर प्रतिभागियों को पालन की गतिविधियों, स्थान के चयन, तालाब को बनाने, स्लाइस गेट, फीड चेक ट्रे के इंस्टालेशन और कैटवॉक के बारे में जानकारी दी गई। यहां पर प्रतिभागियों ने कई सवाल पूछे और उनकी शंकाओं का समाधान किया गया।

बसवकल्याण के सहायक मत्स्य निदेशक Grade-II श्री गौथम ने प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किए और प्रशिक्षणार्थियों को पारितोषिक दिया। इस कार्यक्रम में 30 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया था लेकिन पारितोषिक केवल 20 प्रतिभागियों को दिया गया। श्री एस. एम. शिरोडकर के धन्यवाद प्रस्ताव से कार्यक्रम का समापन हुआ।



कर्नाटक में जागरूकता अभियान



कोडीबाग गांव के केयूपीजी सेंटर में निर्यातान्मुख विविधीकृत जलीय कृषि पर जागरूकता कार्यक्रम।

एमपीईडीए के कारवार उपक्षेत्रीय डिवीजन ने 5 दिसंबर, 2019 को किसानों को जलीय कृषि में प्रतिबंधित एंटीबायोटिक्स और पर्यावरण अनुकूल एंटीबायोटिक्स रहित पर्यावरण अनुकूल बीज के भंडारण पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी श्री शैषेन्द्र शिरोडकर ने जलीय कृषि में एंटीबायोटिक्स और रसायन के प्रतिबंध के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने प्रतिबंधित एंटीबायोटिक्स की सूची वितरित की। इसके अलावा उन्होंने जलीय कृषि में सर्वश्रेष्ठ प्रबंधन के तरीकों, मछली पालन केंद्र के पंजीकरण की प्रक्रिया, राष्ट्रीय मॉनिटरिंग कंट्रोल प्लान (एनआरसीपी) सैम्पल और एंटीबायोटिक्स के सक्रिय मामलों का पता लगाने के एमपीईडीए के विकसित तरीके के बारे में जानकारी दी। इस कार्यक्रम में 15 किसानों ने हिस्सा लिया।

उत्तरी कन्नड़ के कोडीबाग गांव के केयूपीजी सेंटर में निर्यातान्मुख विविधीकृत जलीय कृषि को प्रोत्साहित करने के लिए 12 दिसंबर को कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम को नए उद्यमियों के लिए आयोजित किया

गया था जिसमें 35 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी श्री शैषेन्द्र शिरोडकर ने एमपीईडीए के कार्यों, प्रोत्साहन गतिविधियों और निर्यात बढ़ाने की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रतिभागियों को तिलपिया, मड क्रेब और सीबास पालन की तकनीकों के बारे में जानकारी दी। प्रतिभागियों की शंकाओं का समाधान किया गया।



प्रतिबंधित एंटीबायोटिक्स पर जागरूकता कार्यक्रम।



जलीय कृषि में प्रतिबंधित एंटीबायोटिक्स के इस्तेमाल के खिलाफ अभियान



एमपीईडीए के कोलकाता क्षेत्रीय डिवीजन के जागरूकता अभियान के तहत आयोजित सत्र में जलीय कृषि के किसानों को संबोधित करते डॉ. वाई. बंगारम्मा।

मिदनापुर जिले के साउदकली, गंगराचर और नंदीग्राम में 17 दिसंबर, 2019 को जलीय कृषि में प्रतिबंधित एंटीबायोटिक्स के खिलाफ जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। इसका ध्येय किसानों को जलीयकृषि में प्रतिबंधित एंटीबायोटिक्स में दुष्प्रभाव के बारे में शिक्षित करना था।

इस मौके पर जलीय कृषि में प्रजातियों के विविधीकरण पर

कक्षा आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में साउदकली के 25 किसानों और गंगराचर के 27 किसानों ने हिस्सा लिया। एमपीईडीए के कोलकाता क्षेत्रीय डिवीजन के कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ. वाई. बंगारम्मा और एनएसीएसए के तकनीकी प्रबंधक श्री आर. करीम ने संबंधित विषयों पर अलग-अलग कक्षाएं लीं। इस अवसर पर थीम के पोस्टर भी लगाए गए थे।



प्रतिबंधित एंटीबायोटिक्स पर जागरूकता कार्यक्रम का नजारा।

भारतीय संस्थान ने मछली की ताजगी जांचने के लिए नया यंत्र विकसित किया

कोच्ची आधारित केंद्रीय मत्स्य संस्थान ने (सीआईएफटी) ने बाजार में मछली की ताजगी परखने के लिए आसान, कम लागत वाला और सहजता से इस्तेमाल किए जाने वाला यंत्र विकसित किया है। यह जानकारी द हिन्दू बिजनेस लाइन ने 24 दिसंबर, 2019 को प्रकाशित की।

यह यंत्र एक पेपर की डिस्क की तरह है जो एक पैक के अंदर रहती है। यह मछली के सीधे संपर्क में नहीं आती है। यह डिस्क भंडारण के दौरान छोड़े गए रसायनों की सोखती है और छोड़े गए रसायनों के अनुसार अपना रंग बदलती है। इस्तेमाल करने वालों को केवल डिस्क के बदलते रंग को देखकर मछली की ताजगी का पता कर लेते हैं। इसके लिए प्रयोगशाला के महंगे टेस्ट नहीं करवाने पड़ते हैं।

सीआईएफटी के मछली प्रसंस्करण डिवीजन के वरिष्ठ वैज्ञानिक सी. ओ. मोहन ने कहा कि इस कम लागत वाले टेस्ट से मछली की कीमत पर असर नहीं पड़ेगा और इस टेस्ट का इस्तेमाल चिल्ड, रेफ्रिजरेटिड और बर्फ में रखी हुई मछली पर किया जा सकता है। मोहन ने कहा कि ताजगी प्रदर्शित होने से आपूर्ति शृंखला की बेहतर ढंग से निगरानी हो सकती है और ग्राहकों को बेहतर किस्म की

मछली मिलेगी। अभी रिपोर्ट्स आई हैं कि दुकानदार मछली की ताजगी को कायम रखने के लिए उसमें मिलावट करते हैं, ऐसे में इस यंत्र का इस्तेमाल करने से ग्राहकों का भरोसा बढ़ेगा। यह यंत्र दुकानदारों को प्रोत्साहित करेगा कि वे अपनी मछली की गुणवत्ता को कायम रखें। मोहन ने कहा कि आमतौर पर मछली की ताजगी की जांच सेंसरी एटीब्यूट्स या एनालिटिकल तरीकों के जरिए होती है जिसमें बहुत समय लगता है।

भारत सरकार ने जनवरी, 2018 में दो रैपिड किट लांच की थीं। इनका विकास भी सीआईएफटी ने किया था। इन रैपिड किट के जरिए यह जांच की सकती है कि मछली में फार्मलडिहाइड और अमोनिया की मिलावट की गई है या नहीं। प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया की जनवरी 2018 की रिपोर्ट के मुताबिक इन टेस्ट में पेपर स्ट्रीप, प्रतिक्रिया जांचने के लिए रसायन का घोल और परिणाम जांचने के लिए स्टैंडर्ड चार्ट हैं।

लगातार फार्मलडिहाइड और अमोनिया पहुंचने पर कई शारीरिक समस्याएं खड़ी हो सकती हैं जिसमें अचानक से दर्द होना, उल्टी, बेहोशी और कई बार मौत तक हो सकती है।

www.seafoodsource.com 

Advertisement Tariff in MPEDA Newsletter Rate Per Insertion

#Back Cover (Colour)	Rs. 15,000/-	US\$ 250/-
#Inside Cover	Rs. 10,000/-	US\$ 200/-
Inside Full Page	Rs. 8,000/-	US\$ 150/-
Inside Half Page	Rs. 4,000/-	US\$ 75/-

Publicity @ 5% is extra

* GST @ 18% is extra

Back Cover and inside cover - Booked

Ten Percent concession for contract advertisement for one year (12 issues) or more.

Matter for advertisement should be provided by the advertiser in JPEG or PDF format in CMYK mode.

Mechanical Data : Size : 27 x 20 cms.

Printing : Offset (Multi-colour)

Print Area : Full Page : 23 x 17.5 cm, Half Page : 11.5 x 17.5 cm



For details contact:

Deputy Director (MP) MPEDA House, Panampilly Avenue, Cochin - 682035 Tel: +91 484 2321722, 2311979

Fax: +91 484 2312812, E-mail: newsletter@mpeda.gov.in

गुजरात के लोथल में भारत का पहला समुद्री संग्रहालय बनेगा

सरकार ने भारत में समुद्र के अंदर और समुद्री पुरातत्व को बढ़ावा देने के लिए गुजरात के सौराष्ट्र तट में हड़प्पा की संस्कृति के स्थान लोथल में राष्ट्रीय समुद्री पुरातत्व संग्रहालय स्थापित करने का निर्णय किया है।

इस संग्रहालय में पानी के अंदर के पुरातत्व इतिहास के पुनर्निर्माण, पुरातात्विक नावों के निर्माण और उस जमाने के सामानों के कारोबार पर स्वतंत्र शोध की जाएगी। इसमें हिन्द महासागर में पानी के डूबे हुए जहाजों के स्थलों से निकाली गई सामग्री भी प्रदर्शित की जाएगी। यह संग्रहालय पुर्तगाल के समुद्री पुरातत्व संग्रहालय की तकनीकी मदद से स्थापित किया जा रहा है। केंद्र सरकार ने संग्रहालय के पहले महानिदेशक को नियुक्त कर दिया है जो गुजरात सरकार के समुद्री बोर्ड से संबद्ध होगा। लोथल कांस्य युग के दौर का भारत का सबसे पुराना बंदरगाह है।

पानी के अंदर पुरातत्व

पुरातत्व की विशेष शाखा पानी के अंदर पुरातत्व है जिसमें पानी के अंदर डूबे हुए बंदरगाह, टूटे हुए पोत और पुरातात्विक खुदाई की गतिविधियों के अध्ययन के साथ - साथ पुरालेख और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन होता है। यूनेस्को के अध्ययन के अनुसार महासागर की तलहटी में तकरीबन 30 लाख टूटे हुए पानी के जहाजों की खोज नहीं हुई है। साल 1824 से 1962 के बीच समुद्र में 12,000 समुद्री जहाज लापता हो गए थे। इसमें से कई समुद्री जहाजों का मलबा हिन्द महासागर के जल में समाया हुआ है।

भारत में डूबे हुए जहाजों का अध्ययन 1989 में गोवा के सुंची रीफ में शुरू किया गया था। इसके बाद समुद्र में डूबे हुए जहाजों के मलबे का अध्ययन गोवा के अमी शोल्स के सेंट जार्ज रीफ में हुआ था। इसके बाद गोवा स्थित नेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ ओशियनलॉजी (एनआईओ) के समुद्री पुरातत्व केंद्र ने पामपूहर, कोणार्क और लक्षद्वीप के पानी में खोज की।

इन अध्ययनों से भारत के गौरवशाली समुद्री विरासत के बारे में तथ्य मिले। शोधकर्ता सिला तिरपति (एनआईओ) और रवि कोरीसेटर (कर्नाटक यूनिवर्सिटी के यूजीसी एमेरिटस फेलो) के अनुसार फारस की खाड़ी और दक्षिण पूर्व एशिया से मिले पुरातात्विक तथ्यों से यह जानकारी मिली कि भारत के समुद्री नाविकों ने 4000 साल पहले हिन्द महासागर के पश्चिमी और पूर्वी हिस्से तक यात्रा की।

टूटे हुए समुद्री जहाजों का दस्तावेजीकरण

भारतीय समुद्र अध्ययन ने सुंची रीफ से मिले टूटे हुए समुद्री जहाजों की लकड़ी और उसकी तले की डेंटिंग का अध्ययन किया। इसके अनुसार ये हिस्से 17वीं सदी के भारत-पुर्तगाल व्यापार और वाणिज्य नेटवर्क के थे। सेंट जार्ज रीफ में मिला समुद्री जहाज का मलबा 19वीं सदी का है। एमी शोल में मिला समुद्री जहाज का मलबा संभवतः ब्रिटिशकाल का है जिसकी समय 1880 का अंतिम दशक है। मिनकाय के भाप से चलने वाली समुद्री जहाजों के अवशेष मिले हैं। तमिलनाडु के पूम्पुहार में 18वीं सदी के पानी के जहाज की लकड़ी की तली मिली है। जर्नल करेंट साइंस में सिलसिलेवार प्रकाशित शोधपत्रों के अनुसार ओडीशा के कोणार्क तट पर मिले समुद्री जहाज के हिस्सों से उसका पुनर्निर्माण किया गया है। शोधकर्ताओं के अनुसार “पुरातात्विक तथ्यों के अनुसार रीफ, समुद्र में रेत की उठी हुई भौगोलिक आकृतियों (सैंड बार) और तूफान के कारण गोवा के तट के करीब सिलसिलेवार ढंग से पानी के जहाज डूब गए। पुर्तगाल के 1497-1612 के रिकार्ड्स के मुताबिक लिस्बन से भारत 806 समुद्री जहाज आए। इनमें से 20 पानी के जहाज कम पानी में फंस गए, 66 जहाज जलमग्न हो गए, चार जहाजों पर दुश्मनों ने कब्जा कर लिया, छह जहाज जल गए, 285 जहाज भारत में ही रह गए और बाकी पुर्तगाल वापस आ गए।”

समुद्र में क्षतिग्रस्त होने वाले पुर्तगाली जहाज में सी. क्रिस्टोवेम 17 अगस्त, 1594 को तूफान की चपेट में आ गया था। नाउ सेंटों एंड्रू गोवा के तट पर मई, 1608 में पलट गया था, नोसा सरा डोस और रेमिडियोस भयंकर तूफान में फंस कर 28 जनवरी, 1616 को डूब गए थे। कोलकाता से गोवा आ रहे 12 पुर्तगाली जहाज अंगुदा की खाड़ी में अचानक से आए तूफान में 1648 में डूब गए थे।

शोधकर्ता तिरपति और कोरीसेटर के अनुसार “दस्तावेजों में दर्ज ये सभी जहाज 17वीं से 20वीं सदी के बीच डूबे। यह लकड़ी से लौहा और पतवार से भाप के इंजन की ओर संक्रमण का दौर था। अब तक कोणार्क, विजाग और पूम्पुहार में मिले जहाज के मलबे के इतिहास के बारे में और जानने की जरूरत है।”

विशेषज्ञों ने भारत के समुद्री पुरातत्व में और गठजोड़ करने पर जोर दिया है। कोरीसेटर ने इंडियन साइंस वॉयर को बताया “मैं एनआईओ के समुद्री पुरातत्ववेत्ताओं, चेन्नई स्थित एनआईओटी और तंजुवर स्थित तमिलनाडु यूनिवर्सिटी के

समुद्री पुरातत्वेताओं के बीच बेहतर समन्वय देखना चाहता हूं। द्वारका, पुम्पूर-कवेरीपट्टीनम, महाबलिपुरम, ट्रेन्कीबार, लक्षद्वीप, कोणार्क और गोवा से लगते समुद्र से कलाकृतियां मिली हैं लेकिन सुविधाओं के अभाव और संरक्षण की स्थितियों के कारण कुछ ही वस्तुएं प्रदर्शित की गई हैं जैसे लंगर के पत्थर।

समुद्र में डूबे हुए जहाजों के अध्ययनों से भारत के समुद्री इतिहास और उसके अन्य देशों से व्यापारिक संबंधों के बारे

में भी जानकारी मिलेगी। शोधकर्ताओं के अनुसार कुछ जहाजों का डूबना ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। जैसे ईस्ट इंडिया कंपनी का जहाज द डार्ट माउथ खजाना लेकर जा रहा था और वह मछलीपट्टीनम में 1719 में डूब गया था। कुछ भारतीय जहाज विदेशी जल में भी डूब गए जैसे पीएंडओ लाइनर भगवान बुद्ध की प्रतिमाएं लेकर जाते हुए 1882 में श्रीलंका के समुद्र क्षेत्र में डूब गया।

- www.thehindubusinessline.com 

श्रिम्प के रोगों से निपटने के लिए भारतीय किसानों की मदद करेगी आर्टिफिशल इंटेलिजेंस

प्रोफेसर कंटन मोगेन ने मशीन लर्निंग के जरिए श्रिम्प के रोग का पूर्वानुमान लगाने के लिए एक्वाकनेक्ट, आईडीएच, द सस्टेनेबल ट्रेड इनिशिएटिव के साथ पहल की। इस अभियान का ध्येय अगले दो साल में 13,000 हेक्टेयर पालन केंद्र के क्षेत्र को लाभान्वित करना है। श्रिम्प में रोग लगने के कारण आर्थिक घाटा होता है। एशिया के श्रिम्प उद्योग को रोग के कारण एक दशक में 20 बिलियन अमेरिकी डालर का घाटा हुआ है। भारत का 70 फीसद श्रिम्प उत्पादन आंध्र प्रदेश में होता है। अनुमान यह है कि बीमारी के कारण आंध्र प्रदेश इस साल अपने उत्पादन में 40 फीसद की कटौती कर देगा। श्रिम्प के चारे के नुकसान का आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभाव पड़ता है।

श्रिम्प के चारे और उसके विकास के ढंग का विश्लेषण करने के लिए आर्टिफिशल इंटेलिजेंस

एक्वाकनेक्ट भारत के किसानों को आर्टिफिशल इंटेलिजेंस की मदद से मत्स्य पालन केंद्र के संचालन का प्रबंधन करने और उत्पादन बढ़ाने में मदद करता है। एक्वाकनेक्ट फार्म मोजो मोबाइल ऐप मशीन लर्निंग का इस्तेमाल कर जानवर की सेहत अनुरूप चारे और जानवर के विकास के ढंग का विश्लेषण करता है। यह ऐप किसानों को भविष्य में होने वाली गतिविधियों का पूर्वानुमान मुहैया करवाता है और रोग के बेहतर प्रबंधन के लिए सुझाव देता है। एक्वाकनेक्ट के सीईओ राजामनोहर ने कहा 'भारत सरकार जलीय कृषि को बढ़ावा देने के लिए शीघ्रता से मदद

मुहैया करवा रही है। नीली क्रांति 2.0 को तेजी से बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) शुरू की गई है। हम मशीन लर्निंग में अग्रणी आईडीएच और प्रोफेसर कंटन मोगेन के श्रिम्प महामारी विज्ञान के अध्ययनों से भारत के किसानों के रोगों से होने वाले खतरे को कम कर सकेंगे और उन्हें इस उद्योग में दीर्घकाल तक मदद कर सकेंगे। हम इस गठजोड़ को उत्साहित हैं।'

एक्वाकनेक्ट का ध्येय फार्म मोजो में जलीय महामारी विज्ञान का इस्तेमाल कर रोग के पूर्वानुमान लगाने की क्षमता को बढ़ाना है। पूर्वानुमान लगाने की इस क्षमता का विकास लीवरपुल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर कंटन मोगेन ने किया है, उन्हें महामारी विज्ञान में 40 साल का अनुभव है।

आईडीएच एक्वाकल्चर प्रोग्राम का ध्येय जलीय महामारी विज्ञान से लिंक स्थापित करना है। आईडीएच कई भौगोलिक क्षेत्रों को चारा व रोग के मुद्दों को मदद मुहैया करवाते हैं और लिंकेज को पायलट करता है।

आईडीएच के कार्यक्रम निदेशक फ्लेविया कोरसिन, द सस्टेनेबल ट्रेड इनिशिएटिव और जलीय कृषि के महामारी विज्ञान विशेषज्ञों के अनुसार : श्रिम्प पालन के तरीकों और उसका पर्यावरण लगातार बदलते रहते हैं और इससे रोग जटिल व सोच से परे होते हैं।

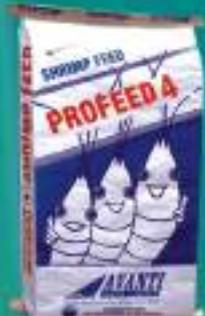
एक्वाकनेक्ट फार्म मैनेजमेंट ऐप में समन्वित महामारी विज्ञान के टूल्स में किसान आर्टिफिशल इंटेलिजेंस से लाभान्वित होते हैं और इससे रोग को समझने, पूर्वानुमान और रोकथाम करने में मदद मिलती है।

- www.businessworld.in 

PRAWN FEED



VANNAMEI FEED



BLACK TIGER SHRIMP FEED



BLACK TIGER SHRIMP FEED

AVANTI FEEDS LIMITED

In the business of quality Prawn feed and Prawn Exports
An ISO 9001: 2008 Certified Company

Aiding sustainability & reliability to Aquaculture



Shrimp Hatchery

Feed Plant - Gujarat

Prawn Feed & Fish Feed

Prawn Processing & Exports

INNOVATIVE - SCIENTIFICALLY FORMULATED - PROVEN

- GREATER APPETITE • HEALTHY & FASTER GROWTH
- LOW FCR WITH HIGHER RETURNS • FRIENDLY WATER QUALITY

AVANT AQUA HEALTH CARE PRODUCTS

AVANTI A.H.C.P. RANGE



Avanti Bact
Sal Probiotic



Avanti Ammoni Absorb
Ammonia Absorber

Avanti Life
Dry Generator

Avanti D-Flow
Water Quality Improver

Avanti Immupak
Immunity Enhancer

Avanti Pro W
Soil & Water Probiotic

Avanti Catcher

Corporate Office: **Avanti Feeds Limited**

G-2, Concord Apartments 6-3-858, Somajiguda, Hyderabad - 500 082, India.
Ph: 040-2331 0260 / 61 Fax: 040-2331 1604. Web: www.avantifeeds.com

Regd. Office: **Avanti Feeds Limited.**

H.No.: 3, Plot No.: 3, Baymount, Rushikonda, Visakhapatnam - 530 045, Andhra Pradesh.



Innovative safeguards against complex risk

At Integro, we understand the risks involved with Seafood. We are committed to simple solutions to complex risks through our expertise.

Protect yourself with bespoke Rejection/Transit Insurance solutions from Integro Insurance Brokers.

Contact us to experience our expertise:
Raja Chandnani
Phone: +44 20 74446320
Email: Raja.Chandnani@integrogroupp.com
www.Integrouk.com

INTEGRO / UK
INSURANCE BROKERS